तेजस्वि नावधीतमस्तु

श्री शंकर शिक्षायतन

कार्यविवरण

2008-2018

डिजाइन और प्रिंट : **विंस्टेट एडवरटाइजिंग**, दिल्ली

अनेकधा गृहीतानां ज्ञानमेकात्मताग्रहः ।
एकत्वेन गृहीतस्य विज्ञानं स्यादनेकता ।।

—ब्रह्मसमन्वय, पृ. ४, श्लोक २०

संसार की सभी वस्तुओं में रहने वाला एक तत्त्व ज्ञान है ।
उस एक का अनेक तत्त्व के रूप में समझ विज्ञान है ।

विषयसूची

1.	संस्थापक की दृष्टि	3
2.	अध्यक्ष की लेखनी से	5
3.	प्रस्तावना	7
4.	पण्डित मोतीलाल शास्त्री स्मारक व्याख्यानमाला	11
5.	ब्रह्मविज्ञान : कार्यशाला एवं संगोष्ठी	19
6.	यज्ञविज्ञान : संगोष्ठी	27
7.	वेदाङ्गविज्ञान : कार्यशाला एवं संगोष्ठी	29
8.	वैदिकपरिचर्चा	33
9.	व्याख्यानमाला	35
10.	ऋषिसम्मान	41
11.	परियोजना	43
12.	छात्रवृत्ति	44
13.	पुस्तकालय	44

असद्वा इदमग्र आसीत् तदाहुः किं तद् असद् आसीद् इति ऋषयो वा अव ते अग्रे असदासीत् तदाहुः, के त ऋषयः इति प्राणा वा ऋषयः।

—शतपथब्राह्मण ६.१.१.१

सृष्टि से पहले असत् था। वह असत् क्या था?
ऋषि ही असत् था। ऋषि कौन है? प्राण ही ऋषि है।

संस्थापक की दृष्टि

वेद मानव चिन्तन का सबसे पुराना स्रोत है। वह ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के रहस्य को बताता है। वेद अपने आप में 'विज्ञान' है। वैदकविज्ञान इस जगत् की सृष्टिसम्बन्धी कारणों को, प्रक्रियाओं को एवं सिद्धान्तों को प्रतिपादित करता है। वैदिक विज्ञान के वास्तविक अर्थ को समझने के लिए उसके कई पारिभाषिक शब्दों को समझना आवश्यक है। विज्ञान शब्द 'वि' उपसर्ग से बना है। जिसके तीन अर्थ हैं– विशेष ज्ञान, ज्ञान की विविधता और विरुद्ध ज्ञान।

विज्ञान का अर्थ है 'ज्ञान की विविधता' या 'विविधता का ज्ञान'। ज्ञान एक मूल तत्त्व है, उससे होने वाली सृष्टि की विविधता ही विज्ञान है। वैदिकविज्ञान की दृष्टि में यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड एकरूपात्मक है जबकि पश्चिम के विद्वान् इसको विभिन्न अवयवों में देखते हैं।

भारतीय ऋषि जडात्मक संसार को चैतन्य से भिन्न नहीं मानते हैं। उनके अनुसार यह एक ही तत्त्व की विविधता है। वेदों में यह ज्ञान अलग अलग रूपों में वर्णित है। जैसे व्यक्ति के स्तर पर आध्यात्मिक, देवता के स्तर पर आधिदैविक और प्रकृति के स्तर पर आधिभौतिक कहलाता है। किन्तु ये तीनों अलग अलग नहीं अपितु आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

वेद न केवल आध्यात्मिक दर्शनमात्र है। अपितु इस में अनेक व्यावहारिक विषयों के अध्ययन के पक्ष हैं। इनमें शरीर संरचना, औषधिविज्ञान, वास्तुकला, नगर निर्माण विधि, मौसमविज्ञान, खगोलविज्ञान, भाषा एवं भाषाविज्ञान, संगीत और नृत्य, राज्यव्यवस्था, अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवहार पद्धति, न्यायशास्त्र, मनोविज्ञान और शरीर विज्ञान जैसे विषयों को लिया गया है।

वेदों का अध्ययन, विशेष रूप से पण्डित मधुसूदन ओझा द्वारा प्रतिपादित ज्ञान की धारा और पण्डित मोतीलाल शास्त्री द्वारा की गयी व्याख्या के सन्दर्भ में करने से हमारे मन में शताब्दियों से पड़ी भ्रान्ति को दूर करता है।

शास्त्रीजी ने इस परम्परा को जीवित रखने और इसे आगे बढ़ाने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित किया। मैंने अपने गुरु को अपने सीमित क्षमता के अनुसार उनके निर्देश को निर्वहन करने का प्रयास किया है। केवल इतना पर्याप्त नहीं है। बहुत अधिक काम करने की जरूरत है, कई विद्वानों को सम्मिलित करना होगा और वैदिक शिक्षा के केन्द्रों में भाग लेना होगा। यह कई जीवनों का काम है। लेकिन इसको करना आवश्यक है।

श्री शंकर शिक्षायत इस उद्देश्य की दिशा में एक कदम है। यह इस विश्वास के साथ स्थापित किया गया है कि वेदों का अध्ययन, विनम्रता और खुले दिमाग से किया जाय, जो हमें सृष्टि के रहस्यों को और जीवन के गहन अर्थों को जानने में उपयोगी हो।

श्री ऋषि कुमार मिश्र
(१९३२-२००९)

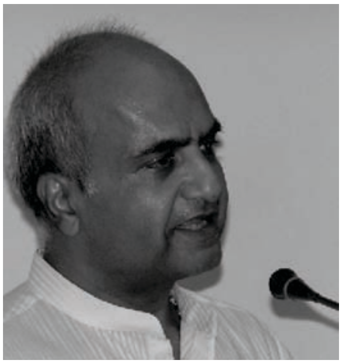

अध्यक्ष की लेखनी से

श्री शंकर शिक्षायतन के साथ हमारा सम्बन्ध श्री ऋषि कुमार मिश्र जी के कारण हुआ। उन्होंने मुझे इस कार्य में लगाया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में उन्होंने श्री शंकर शिक्षायतन की भावी कार्ययोजना की जो रूपरेखा प्रस्तुत की वह आज भी हमारे स्मृति पटल पर अंकित है। २००९ से श्री शंकर शिक्षायतन के अध्यक्ष के रूप में वैदिकविज्ञान के अनेक शैक्षिकगतिविधियों का साक्षी हूँ।

मुझे सन्तोष है कि इस अवधि में शिक्षायतन ने भारत के अनेक विश्वविद्यालयों के साथ जुड़कर विविध आयोजनों के द्वारा पण्डित ओझा एवं पण्डित शास्त्री जी की कृतियों के विश्लेषणात्मक अध्ययन में विद्वानों को जोड़ा है। इनके ग्रन्थों को आधार बनाकर अनेक पी-एच. डी एवं पोस्ट डॉक्टरल शोधकार्य हुए हैं।

ऋषिसम्मान के माध्यम से संस्कृत विद्या एवं वैदिकविज्ञान में संलग्न विद्वानों को सम्मानित कर रहा है। हमारी व्याख्यानमालाओं में वैदिक तत्त्वज्ञान के विविध विषयों पर विमर्श प्रस्तुत किया गया है। पण्डित ओझा जी एवं शास्त्री जी के उपलब्ध सभी ग्रन्थों को ई-टेक्स्ट के रूप में निःशुल्क विश्वभर में उपलब्ध कराना शिक्षायतन की एक विशेष उपलब्धि है। इन्द्रविजय का अंग्रेजी अनुवाद प्रो. कपिल कपूर के द्वारा करना एवं रूपा प्रकाशन से प्रकाशित होना, गौरव का विषय है। हमारे विशिष्ट विद्वान् विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं। शीघ्र ही ये सभी कार्य सर्वसुलभ किये जायेंगे।

हमें इन उपलब्धियों के साथ साथ निरन्तर आगे बढ़ने की जरूरत है। उद्देश्य व्यापक है। अधिक परिश्रम की जरूरत है, तभी हम अपनी योजनाओं एवं उद्देश्यों को पूर्ण कर सकेंगे। शिक्षायतन के सभी अध्येताओं एवं शोधार्थियों से अपेक्षा है कि वे वैदिक विज्ञान के विस्तार एवं प्रसार के द्वारा अपनी ज्ञानपरम्परा एवं संस्कृति की समझ ऐसी विकसित करेंगे जिससे न केवल भारत अपितु विश्व भी लाभान्वित हो सके।

श्री भरत गोयनका
अध्यक्ष
श्री शंकर शिक्षायतन न्यास

प्रस्तावना

श्री ऋषि कुमार मिश्र जी ने २००२ में वैदिकविज्ञान के अध्ययन-अध्यापन, प्रचार-प्रसार एवं शोध के लिए श्री शंकर शिक्षायतन की संस्थापना की। श्री मिश्रजी ने अपने गुरु पण्डित मोतीलाल शास्त्री के निर्देशानुसार वेदविद्या की परम्परा के संरक्षण एवं विस्तार के उद्देश्य को लेकर तथा वैदिक विज्ञान से आज के समाज को अवगत कराने के लिए यह न्यास बनाया। पं. मधुसूदन ओझा जी ने वैदिकविद्या की व्याख्या के लिए संस्कृत में वैदिकविज्ञान के ग्रन्थों का लेखन किया। ओझाजी के शिष्य पं. मोतीलाल शास्त्री जी द्वारा हिन्दी में लिखा गया विस्तृत वाङ्मय वैदिकविज्ञान के चिन्तन को नयी दिशा देता है। पं. शास्त्री जी के शिष्य श्री मिश्र जी ने वैदिकविज्ञान के विविध पक्षों का प्रतिपादन करने वाले पाँच ग्रन्थों का अंग्रेजी में प्रणयन किया। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम क्षण में भी श्री शंकर शिक्षायतन के कार्यों एवं भावी योजानाओं की रूपरेखा बनायी। सभी शैक्षिक गतिविधियों को सुचारु रूप से संचालित करते रहने का निर्देश दिया। २००८ में पण्डित मोतीलाल शास्त्री के शताब्दी समारोह को संबोधित करते हुए मिश्रजी ने वैदिक विज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रकार के कार्यों एवं शोधों पर जोर दिया था।

वैदिकविद्या के महान् आचार्य पण्डित मधुसूदन ओझा तथा उनके शिष्य पण्डित मोतीलाल शास्त्री द्वारा वैदिकविज्ञान के क्षेत्र में किये गये बौद्धिक अवदान को छात्रों एवं विद्वत्समाज में विस्तार करने के लिए श्री शंकर शिक्षायतन संलग्न है। पण्डित मधुसूदन ओझा एवं पण्डित मोतीलाल शास्त्री के लेखन का मुख्य उद्देश्य वेदार्थ का प्रतिपादन करना है। इन्होंने इस दृष्टि से संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् ग्रन्थों का गहन अध्ययन कर वैदिक विज्ञान का प्रतिपादन किया और उस में प्रधानरूप से पाँच विषयों पर ग्रन्थ लेखन किया। शिक्षायतन वैदिक विज्ञान के प्रमुख क्षेत्रों ब्रह्म विज्ञान, यज्ञ विज्ञान, आगम विज्ञान, पुराण विज्ञान एवं वेदाङ्ग विज्ञान को आधार बनाकर निरन्तर कार्य कर रहा है। ब्रह्मविज्ञान का अर्थ सृष्टिविद्या है। एक तत्त्व का दूसरे तत्त्व से मिलना यज्ञ विज्ञान है। पुराण विज्ञान सृष्टिविद्या है। इस विद्या का आख्यान, उपाख्यान आदि के द्वारा सृष्टि का वर्णन करने वाला ग्रन्थ पुराण कहलाते हैं। लौकिक सृष्टि संबन्धित आख्यान एवं उपाख्यान इतिहास कहलाता है। वेदाङ्ग विज्ञान से वेदार्थ का ज्ञान होता है। शक्तिस्वरूप दशमहाविद्या का प्रतिपादक शास्त्र आगमविज्ञान है। आगमसाहित्य शिव-पार्वती का संवादरूप है।

वैदिक विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन एवं शोध में रुचि रखने वाले शोधार्थियों को छात्रवृत्ति आदि प्रदान करता है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर निरन्तर कार्यशाला, संगोष्ठी, सम्मेलन एवं व्याख्यानमाला आदि के माध्यम से विद्वत्समाज में वैदिकविज्ञान के प्रसार में सतत प्रयत्नशील है। वैदिक विज्ञान के क्षेत्रों में विगत दस वर्षों से विशेष रूप से ऋषि, छन्द, देवता और यज्ञ इन चार विषयों को आधार बनाकर श्री शंकर शिक्षायतन ने विविध कार्यक्रमों का सफल समायोजन किया है।

श्री शंकर शिक्षायतन २००८ से २०१८ की समग्र गतिविधियों का कार्यविवरण (रिपोर्ट) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव कर रहा है। आप सभी के सुझाव एवं सहयोग की सतत आकांक्षा है।

यत्र प्रदर्श्या विषयाः पुरातना
यत्र प्रकारोऽभिनवः प्रदर्शने।
यत्र प्रमाणं श्रुतयः सयुक्तयस्-
तद् ब्रह्मविज्ञानमिदं विमृश्यताम्॥

–ब्रह्मसिद्धान्त, पृ. ६, श्लोक २१

यह विषय प्राचीन है। इसे नए ढ़ंग से प्रस्तुत किया जा रहा है।
जिसमें तर्क सहित वेद ही यहाँ प्रमाण है।
ऐसे ब्रह्मविज्ञान का विद्वान् लोग गम्भीरतापूर्वक विचार करें।

पण्डित मोतीलाल शास्त्री स्मारक व्याख्यानमाला

वैदिक विज्ञान के प्रवर्तक पं. मधुसूदन ओझा के शिष्य पं. मोतीलाल शास्त्री ने वैदिकविज्ञान को सरलतम भाषा में जनसामान्य को समझाने के लिए शतपथब्राह्मण, उपनिषद् और गीता आदि ग्रन्थों पर विस्तृत विज्ञानभाष्य लिख कर वैदिक विज्ञान की परम्परा को अपना योगदान दिया। २०वीं शताब्दी के ये ऐसे आचार्य हैं जिन्होंने वेदविद्या के संरक्षण एवं प्रचार प्रसार के लिए जयपुर में मानवाश्रम (राजस्थान वैदिक तत्त्वशोध संस्थान) की स्थापना की। ऐसे महान् आचार्य के कार्य को जीवन्त बनाना शिक्षायतन का उद्देश्य है।

पं. शास्त्री के विज्ञानभाष्य की दृष्टि **२० सितम्बर २००८**

इस समारोह में श्री शंकर शिक्षायतन के संस्थापक श्री ऋषिकुमार मिश्र ने अपने उद्‌बोधन में पण्डित मोतीलाल शास्त्री का जीवनवृत्तान्त और वेदविज्ञान के लिए उन्होंने जो लिखा है उसके महत्त्व को उद्‌घाटित किया। उन्होंने मुख्यरूप से शास्त्रीजी का पण्डित मधुसूदन ओझा जी के साथ जो संवाद हुआ था उसका उल्लेख किया तथा वेद का स्वरूप तत्त्वात्मक है, ऐसा प्रतिपादन किया। श्री मिश्रजी ने अपने गुरु के प्रति समर्पण भाव से उनके शताब्दी समारोह का समायोजन किया।

श्री कैलाश चतुर्वेदी ने शास्त्री जी के संस्मरणों को श्रोताओं के साथ साझा किया। उन्होंने कहा कि शास्त्री जी कहा करते थे कि मेरे द्वारा लिखित ग्रन्थों को प्रकाशित करना ही मेरा सम्मान है और मैं इस कार्य में लगा हुआ हूँ। इनके द्वारा लिखित गीता में कृष्णतत्त्व जो दो भागों में है उसके प्रकाशन का कार्य कर रहा हूँ।

मुख्य अतिथि प्रो. युगल किशोर मिश्र, कुलपति, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय ने अपने व्याख्यान में कहा कि ''वेद में धर्म अर्थात् क्रिया और ब्रह्म अर्थात् ज्ञान का ही निरूपण है। इस प्रसंग में दो वचन ध्यान देने योग्य हैं। एक मनु कहते हैं–'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' और दूसरा गीता में लिखा है–'वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः'। दोनों का तात्पर्य यह है कि समस्त वेद धर्म का मूल है तथा समस्त वेदों के द्वारा आत्मा अथवा ब्रह्म (अहमेव) ही जानने योग्य है। संक्षेप में तात्पर्य यह है कि वेद धर्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान के आधार ग्रन्थ हैं।''

मुख्य वक्ता पण्डित अनन्त शर्मा, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय ने शास्त्रीजी की व्याख्याशैली को बताते हुए कहा कि शतपथब्राह्मण में वर्णित तथा निरुक्त मत में तीनों लोक पृथ्वी, अन्तरिक्ष

तथा द्यौ ये तीन विश्व हैं। इन तीनों में तीन नर अग्नि, वायु और आदित्य रहते हैं। अतः तीन विश्वों के तीनों नर ही वैश्वानर हैं जो अग्नि, वायु आदित्य हैं। अध्यात्म में भी तीन लोक हैं। अतः तीन वैश्वानर हैं।

इस पृथ्वी पर भी तीन लोक हैं। अतः यहाँ भी तीन नरों के साथ निश्चित संबन्ध से तीन वैश्वानर हैं। निरुक्त की टीकाओं में आचार्य दुर्ग से लेकर आज तक के विभिन्न टीकाकार वैश्वानर का यह अर्थ नहीं बता पाये हैं। पण्डित मोतीलाल शास्त्री ने शतपथविज्ञानभाष्य, कठ, प्रश्न आदि उपनिषद् भाष्य में इन अर्थों को पूर्णतः स्पष्ट किया है।

शास्त्री जी के पुत्र श्री कृष्णचन्द्र शास्त्री ने कहा कि पण्डित शास्त्री जी का जीवन अत्यन्त ही सरल था। उन्होंने कहा कि शास्त्री जी ने अपनी इहलीला की संपूर्णता ५१ वर्ष की अवस्था में की। उन्होंने आध्यात्मिक शक्ति से भगवत्स्वरूप को प्राप्त किया। वे मुक्तपुरुष के रूप में कार्य करते थे। कभी कठिन परिश्रम से ग्रन्थ का लेखन, तो कभी बच्चों के साथ खेलना, कभी प्रतिष्ठित विद्वानों के साथ शास्त्र की चर्चा करते रहते थे। व्याख्यान के समय ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे सरस्वती उनकी जिह्वा पर विराजमान हो।

सारस्वत अथिति प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली ने शास्त्री जी के शतपथब्राह्मण विज्ञानभाष्य के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि वैदिकविज्ञान के लिए यह विज्ञानभाष्य ज्ञान-विज्ञान की निधि है। इसमें शास्त्री जी ने ब्राह्मण ग्रन्थों के कर्मकाण्डीय स्वरूप की रक्षा करते हुए आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक व्याख्या प्रस्तुत की है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. कपिल कपूर ने कहा कि वर्तमान समय के अनुरूप शास्त्र की व्याख्या शास्त्रीजी ने की है। शास्त्री जी ने वेद के कठिन पारिभाषिक पदों के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए अच्छी भूमिका लिखी है। ओझाजी और शास्त्री जी ने वेद में निहित विज्ञान को स्पष्ट करने के लिए अनेक ग्रन्थों को लिखा है जिस पर आज गहन शोधकार्य करने की आवश्यकता है तथा भारतीय मानस को वैदिकविज्ञान से परिचय कराने का उत्तरदायित्व श्री शंकर शिक्षायतन न्यास को एवं श्री सन्तोषजी को है। श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के सारस्वतसदन में इस कार्यक्रम को आयोजित किया गया।

अत्रिख्याति

बिफोर द बिगनिंग एण्ड आफ्टर द इन्ड **२९ सितम्बर २००९**

श्री शंकर शिक्षायतन के अध्यक्ष श्री भरत गोयनका जी ने स्वागत वक्तव्य में मञ्च पर आसीन सभी विद्वानों को एवं श्रोताओं को सम्बोधित किया तथा उन्होंने श्री ऋषि कुमारमिश्र जी के साथ अपने मधुर सम्बन्धों को साझा किया। उन्होंने जोर देकर यह बात कही कि ओझा जी, शास्त्री जी एवं मिश्र जी के बौद्धिक योगदान को आगे बढ़ाने के लिए मैं कृतसंकल्पित हूँ।

पण्डित मधुसूदन ओझा प्रणीत अत्रिख्याति विषय पर जयपुर के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् पण्डित अनन्त शर्मा ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। वे अत्रिख्याति ग्रन्थ के हिन्दी अनुवादक हैं। उन्हीं का व्याख्यान इसी ग्रन्थ पर समायोजित था। उन्होंने इस ग्रन्थ के विषय में कहा है कि ओझा जी ने अत्रि का क्रमश: ब्रह्मा एवं प्राण के रूप में वर्णन किया है। चन्द्रवंश का विशद वर्णन अत्रिख्याति में हुआ है। अत्रि का मुनि के रूप में जब वर्णन होगा तो अत्रि की पत्नी अनुसूया का चरित का भी प्रसंग आयेगा। चन्द्रस्वरूप से उनकी पत्नी रोहिणी का स्वरूप भी आयेगा। फिर बुध के साथ-साथ इला का भी चरित का वर्णन होगा। ओझा जी का यह ग्रन्थ भारतीय इतिहास को बतलाता है।

द्वितीय वक्ता के रूप में वैदिक अनुसन्धाता श्री रवि खन्ना ने श्री ऋषिकुमार मिश्र द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखित 'बिफोर द बिगनिंग एण्ड आफ्टर द इन्ड' नामक ग्रन्थ पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि श्री मिश्र जी ने इस ग्रन्थ में आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धान्तों का वर्णन वैदिकविज्ञान के आलोक में प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ में नौ भाग हैं तथा प्रत्येक भाग में अध्याय हैं। इसमें प्रजापति, यज्ञ, जीव, ईश्वर और परमेश्वर के स्वरूप का वर्णन किया गया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. कपिल कपूर ने कहा कि मिश्र जी ने किस प्रकार अपने ग्रन्थ को अपने गुरुजी को समर्पित किया है। जो विचारक ब्राह्मणग्रन्थ को वेद नहीं मानते उनके विचार को भी समाहित करते हुए ब्रह्मणग्रन्थ वेद हैं, ऐसा प्रतिपादन शास्त्री जी ने किया है। यह कार्यक्रम इण्डिया इन्टर नेशनल सेंटर में समायोजित किया गया।

बिफोर द बिगनिंग एण्ड आफ्टर द इन्ड **२८ सितम्बर २०१०**

श्री ऋषि कुमार मिश्र द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखित 'बिफोर द बिगनिंग एण्ड आफ्टर द इन्ड' नामक ग्रन्थ पर श्री कलानाथ शास्त्री, जयपुर ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'विज्ञान क्या है इस पर विद्वानों ने अनेक व्युत्पत्तियाँ दी हैं- विशिष्टं ज्ञानं, विरुद्धं ज्ञानं, विविधं ज्ञानं विज्ञानम् आदि। मिश्र जी बड़े सहज ढ़ंग से इसे समझाते हैं। वे न्यूटन, आईन्स्टीन, आदि से लेकर वर्तमान स्टीवन हाकिन्स तक के सिद्धान्तों का जिक्र करते हैं, वरिष्ठ पत्रकार तथा अंग्रेजी के शिखर स्तर के लेखक होने के कारण आधुनिक वैज्ञानिक स्थापनाओं की जानकारी उन्हें होना स्वाभाविक ही था। अत: वे नवीनतम स्थापनाओं को वेद में खोजने की चकाचौंध में न पड़ कर, केवल वेदों से लेकर शास्त्रों तक ज्ञान विज्ञान के जो सिद्धान्त स्थापित हैं, उन्हें अंग्रेजी में ओझा जी और शास्त्री जी के व्याख्यानों के अनुरूप समझाने का कार्य करते हैं।

श्री रवि खन्ना ने इसी विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने स्पष्टरूप में कहा कि मिश्र जी द्वारा लिखित यह ग्रन्थ वेद विद्या एवं आधुनिक विज्ञान को जोड़ने का कार्य कर रहा है। इस ग्रन्थ से वैदिकविज्ञान को बहुत बड़ा उपकार हुआ है । इस के माध्यम से वैदिकविज्ञान को विश्व के अंग्रेजी पाठकों के समक्ष रखा गया है। इसका अध्ययन आधुनिक विज्ञान को वैदिक विज्ञान के साथ-साथ जानने में विशेष उपयोगी है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. वागीश शुक्ल, भारतीय तकनीकि संस्थान, नई दिल्ली ने कहा कि वैदिक विज्ञान में वर्णित सृष्टविषयक सिद्धान्तों का विश्लेषण आधुनिक विज्ञान के साथ मिलकर करने की आवश्यकता है। श्री ऋषि कुमार मिश्र ने इसी दृष्टि का उपयोग अपनी किताब में किया है।

पं. मधुसूदन ओझा रचित इन्द्रविजय
पं. मधुसूदन ओझा रचित शारीरकविज्ञान **२८ सितम्बर २०११**

कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्री ऋषि कुमार मिश्र द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखित 'द होल बिंग : ए जर्नि टुवार्डस् हारमोनी एण्ड हैपिनेस' का लोकार्पण किया गया।

प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, ने पण्डित मधुसूदन ओझा प्रणीत इन्द्रविजय पर अपना सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि- 'इन्द्रविजय' एक ऐसा विलक्षण ग्रन्थ है, जिसमें वैदिक इतिहास और भारतवर्ष के प्राचीन भूगोल का प्रमाण पूर्वक विवेचन है। समग्र ग्रन्थ पाँच प्रक्रमों में विभक्त है और इनमें यथास्थान बारह चित्र हैं। पाँच प्रक्रमों के नाम इस प्रकार हैं- भारतपरिचय, आर्यदासीय, विज्ञानभवन, दस्युनिग्रह, इन्द्रविजयाभिनन्दन।

भारत परिचय नामक शीर्षक में सर्वप्रथम त्रैलोक्य का प्रसंग आता है। जो दिव्य, शारीर और भौम के भेद से तीन प्रकार के हैं। उनमें अग्नि, वायु और इन्द्र को दिव्य-त्रैलोक्य कहा जाता है। गुदा स्थान से नाभि तक पृथ्वीलोक, हृदय से कण्ठ तक द्युलोक और बीच में उदर अन्तरिक्षलोक है, यही तीनों शारीरिक त्रैलोक्य है। मनुष्यलोक पृथ्वी है, देवताओं का निवास द्युलोक और तिर्यक् जगत् का लोक अन्तरिक्षलोक है, यही तीनों भौम त्रैलोक्य है।

डॉ. धनञ्जय कुमार पाण्डेय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, ने पण्डित मधुसूदन ओझा विरचित शारीरकविज्ञानभाष्य पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि-'विज्ञानभाष्य का यह सिद्धान्त पक्ष है कि संपूर्ण वेदान्तवाक्य जगत् की उत्पत्ति और प्रलय का कारणरूप ब्रह्म का प्रतिपादन करता है। ओझा जी का इस सन्दर्भ में यहाँ तक कहना है कि ब्रह्मसूत्र के माध्यम से वेदान्तवाक्यों (उपनिषद् वाक्यों का) को युक्तियुक्त विचार करना संभव है। श्रुतिवाक्यों में परस्पर संदेह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो उसका निराकरण ब्रह्मसूत्र ही करता है। इससे ब्रह्मसूत्र की अपूर्वता का एक विशेष प्रस्थान सामने आता है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. आर. पी. सिंह, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, ने कहा कि ब्रह्मसूत्र की नवीन व्याख्या पण्डित मधुसूदन ओझाजी ने किया है। इस पर गहन शोध कार्य हो तथा आचार्य शंकर के साथ इनका क्या साम्य तथा वैषम्य है, यह स्पष्टता से ज्ञात होना चाहिए तभी इसकी प्रासंगिकता पाठक को समझ में आयेगी। उनका इन्द्रविजय ग्रन्थ भारत देश का समग्र इतिहास तथा भूगोल है, ऐसा वक्ता ने कहा है। ओझाजी ने जो प्रमाण प्रस्तुत किया है उसका वर्तमान स्रोत के साथ सम्बन्ध बना कर एक विशाल भारत का स्वरूप परिलक्षित होगा।

पं. मधुसूदन ओझा रचित इन्द्रविजय
पं. मोतीलाल शास्त्री की वेदव्याख्या पद्धति **२८ सितम्बर २०१२**

प्रो. कपिल कपूर, ने पण्डित मधुसूदन ओझा विरचित इन्द्रविजय ग्रन्थ पर अपना व्याख्यान दिया। उस समय प्रो. कपूर इन्द्रविजय ग्रन्थ का अंग्रेजी में अनुवाद भी कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ओझा जी ने इन्द्रविजय में यह बतलाया है कि भारतवर्ष की सीमा लाल सागर से चीन तक तथा इरान से अफगानिस्तान तक फैला हुआ था। वर्तमान ऐतिहासिकों के लिए यह विशेष बात हो सकती है क्योंकि उनको पुरातात्त्विक अभिलेख की आवश्यकता होती है। इसी ग्रन्थ में विज्ञानभवन नामक अध्याय में सूर्यसदन की बात आधुनिक वैज्ञानिकों के लिए भी विशेष महत्त्व रखता है।

डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल

डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल, समन्वयक, श्री शंकर शिक्षायतन ने कहा कि शास्त्री जी ने शतपथब्राह्मण विज्ञानभाष्य की व्याख्या आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक दृष्टि से की है। आध्यात्मिक से वैयक्तिकस्तर पर, आधिभौतिक से प्रकृतिस्तर पर एवं आधिदैविक से देवता के स्तर पर मन्त्रों की व्याख्या की। जबकि आचार्य सायण ने शतपथब्राह्मण की यज्ञपरक व्याख्या की है जो केवल द्रव्ययज्ञ को बतलाता है। ओझा जी, शास्त्री जी एवं मिश्र जी एक व्यापक सोच के साथ ब्राह्मण ग्रन्थों को देखना चाहते हैं। वैदिकविज्ञान ब्राह्मणग्रन्थों के आधार पर व्यवस्थित है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. आशुतोष दयाल माथुर, सेन्ट स्टीफन कालेज, ने अपने वक्तव्य में कहा कि इन्द्रविजय के तथ्यों को आधुनिक प्रमाणों से एवं भारत के प्राचीन नक्शों को ढूढ़ कर उस के साथ संबन्ध बनाने का कार्य होना चाहिए। वेदव्याख्या के विषय में उन्होंने कहा कि शास्त्री जी की व्याख्या अत्यन्त ही प्रभावशाली है। शतपथब्राह्मण ग्रन्थ की भूमिका में अनेक वैदिक पारिभाषिक व्याख्या मिलती है जो वर्तमान समय में वेदविज्ञान के जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसको जाने बिना ब्राह्मणग्रन्थ के अर्थ को समझना कठिन है।

शतपथब्राह्मण विज्ञानभाष्य में पं. मोतीलाल शास्त्री द्वारा प्रतिपादित वेदव्याख्यापद्धति
पं. मधुसूदन ओझा विरचित छन्दःसमीक्षाग्रन्थ का विश्लेषण **२८ सितम्बर २०१३**

कार्यक्रम के प्रथम वक्ता प्रो. हृदय रञ्जन शर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, ने कहा कि शास्त्रीजी की वेदव्याख्या की दृष्टि अत्यन्त ही नवीन और वैदिक प्रमाणों से पुष्ट है। उदाहरण के रूप में हृदय शब्द को यहाँ लिया जाता है। हृ-द-य इन तीनों पदों में 'हृ' का अर्थ आदानरूप ग्रहण है, 'द' का अर्थ विसर्ग अर्थात् छोड़ना तथा 'य' का अर्थ स्थिति है। इस प्रकार हृदय का अर्थ वस्तु मात्र को ग्रहण करना, त्याग करना तथा स्थित रखना है। इस के प्रमाण में शास्त्री जी ने यजुर्वेद के 'प्रजापतिश्चरति..' इस मन्त्र को उद्धृत भी किया है।

छन्द:समीक्षाग्रन्थ के प्रतिपाद्य को उद्घाटित करते हुए द्वितीय वक्ता डॉ. रमाकान्त शुक्ल, देववाणी परिषद्, दिल्ली, ने कहा कि लौकिक छन्दों के पढ़ने मात्र से छात्र को छन्द के लक्षण और उसके उदाहरण दोनों का बोध हो जाता है। लेकिन ओझाजी के छन्दोलक्षणों का तात्पर्य दूसरा है। उनके अनुसार छन्द एक सृष्टि का कारक तत्त्व है जैसे अद्वैतवेदान्त में ब्रह्म। दूसरी व्याख्या यह है कि यजुर्वेद में मा छन्द, प्रमा छन्द ये यजुर्वेद में पठित हैं। अतएव लौकिक छन्द से विशिष्ट वैदिक छन्दों को व्याख्यायित करने का प्रयास ओझाजी ने किया है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित अनन्त शर्मा ने कहा कि ओझाजी और शास्त्रीजी ने वेद की व्याख्या ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर किया है। वे पारिभाषिक पद को समझाना चाहते हैं इसी उद्देश्य से कहीं पद के एक-एक अक्षर का अर्थ करते हैं तो कहीं पूरे वाक्य का अर्थ करते हैं। वेद मन्त्रों का अध्ययन छन्द के बिना संभव नहीं है जबकि लौकिक संस्कृत का अध्ययन छन्द के बिना भी हो सकता है। इण्डिया इन्टर नेशनल सेंटर में इसको आयोजित किया गया।

वर्णसमीक्षा **२८ सितम्बर २०१५**

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी, ने कहा कि पण्डित मधुसूदन ओझा जी की बुद्धि में विदेशी विद्वानों द्वारा किया गया प्रश्न था। इसीलिए ओझाजी ने वर्ण सम्बन्धी सिद्धान्त को स्पष्ट किया है। उनका एक और ग्रन्थ है पथ्यास्वस्ति जिसमें उन्होंने वैदिक भाषाओं पर विचार किया है जबकि वर्णसमीक्षा का विषय वैदिक एवं लौकिक दोनों है।

प्रो. कृष्णकान्त शर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, ने वर्णसमीक्षाग्रन्थ के प्रतिपाद्य विषय पर अपना विचार रखते हुए कहा कि इसमें ब्रह्ममातृका, अक्षमातृका, रुद्रमातृका, भूतमातृका और होड़ामातृका का वर्णन मिलता है। भाषा का विस्तार इन मातृकाओं के आधार पर ही होता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली ने किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि यह ग्रन्थ भाषाशास्त्र के अध्ययन के लिए उपयोगी है। इसमें अनेक ऐसे तथ्य आये हैं जिसका प्रातिशाख्यों में संकेत मिलता है परन्तु ओझाजी ने इस ग्रन्थ में उस विषय को स्पष्टता से प्रतिपादन किया है। उदाहरण के लिए भाषाशास्त्रीय शब्द है रङ्ग। जब हम किसी द्रव्य से निर्मित पात्र को हाथ से संपर्क करते हैं तो गूँज होती है वही रङ्ग है। भाषा में भी किसी शब्द पर जोर देकर अधिक देर तक उच्चारण करते हैं तो वही रङ्ग ध्वनिविज्ञान का पारिभाषिक पद कहलाता है। इस प्रकार अनेक भाषिक शब्दों को ओझाजी ने स्पष्ट किया है। इसका आयोजन इण्डिया इन्टर नेशनल सेंटर में किया गया।

व्याकरणविनोद की भाषाशास्त्रीय समीक्षा २८ सितम्बर २०१६

यह व्याख्यान पं. मधुसूदन ओझा प्रणीत व्याकरणविनोद नामक ग्रन्थ को आधार बनाकर 'व्याकरणविनोद की भाषाशास्त्रीय समीक्षा' विषय पर समायोजित था। डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल ने अपने स्वागत वक्तव्य के माध्यम से श्री शंकर शिक्षायतन के विविध गतिविधियों एवं उद्देश्य को बतलाने के क्रम में कहा कि 'व्याकरणविनोद की भाषाशास्त्रीय समीक्षा' विषय का चयन ओझा जी के इस ग्रन्थ को विद्वानों एवं शोधार्थियों के मध्य अध्ययन एवं शोध का विषय बनाने के उद्देश्य से किया गया है।

विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने बतलाया कि व्याकरणविनोद नामक ग्रन्थ कुल छह परिच्छेदों में विभक्त है- समासपरिच्छेद, तद्धितपरिच्छेद, नामधातुपरिच्छेद, प्रक्रियापरिच्छेद, कृदन्तपरिच्छेद एवं अव्ययपरिच्छेद । उन्होंने व्याकरणविनोद का पाणिनीय व्याकरण से भिन्नता का प्रतिपादन करते हुए कतिपय उदाहरणों को भी प्रस्तुत किया ।

मुख्य वक्ता प्रो. शशिनाथ झा, व्याकरण विभागाध्यक्ष, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा ने अपने सारगर्भित व्याख्यान का प्रारम्भ अपने श्लेषात्मक मंगलाचरण से किया जिसका एक अर्थ विष्णु के पक्ष में और दूसरा अर्थ मधुसूदन ओझा के पक्ष में है। उन्होंने बतलाया कि इस ग्रन्थ के अध्ययन से यह सूचित होता है कि इसकी सम्पूर्ण पाण्डुलिपियाँ अभी प्राप्त नहीं हो सकी हैं जिनका अन्वेषण कर इस ग्रन्थ को और सुदृढ बनाया जा सकता है । उनके अनुसार यह व्याकरण का एक अद्‌भुत ग्रन्थ है जो पाणिनि व्याकरण से मतवैभिन्य रखता हुआ भी व्याकरण के अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपादेय है । इन्होंने ओझाजी द्वारा इस ग्रन्थ में समास की नूतन परिभाषओं एवं ऐसे अनेक उदाहरणों को जिनकी सिद्धि पाणिनि व्याकरण में जहाँ आर्षप्रयोग कह कर की जाती है, उसे ओझाजी द्वारा तार्किक रूप से सिद्धि कैसे की गयी है, इसका विधिवत् प्रतिपादन किया। इसके पश्चात् इस ग्रन्थ के छहों परिच्छेदों पर क्रमश: सूक्ष्मविचार करते हुए एक-एक विषयों का पाणिनि व्याकरण से तुलनात्मक समीक्षा करते हुए अपने सारगर्भित व्याख्यान को प्रस्तुत किया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रमेश चन्द्र पण्डा, कुलपति, कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन ने व्याकरणविनोद ग्रन्थ को व्यावहारिक व्याकरण के लिए उत्कृष्ट बतलाते हुए कहा कि अध्येता जो व्याकरणशास्त्र के अध्ययन में पारंगत तो नहीं हुए हैं लेकिन अभी उस ओर अग्रसर हैं, उनके लिए यह अत्यन्त ही उपयोगी है। साथ ही इस ग्रन्थ को पारम्परिक पद्धति से पढ़ने वाले मध्यमा एवं शास्त्री स्तर के छात्रों एवं आधुनिक विश्वविद्यालयीय पद्धति से अध्ययन करने वाले स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों को पढ़ने के लिए उपादेय ग्रन्थ बतलाया ।

इस अवसर पर श्री शंकर शिक्षायतन के नवनिर्मित अन्तर्जालफलक का लोकार्पण सत्र के अध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र पण्डा एवं मुख्य वक्ता प्रो. शशिनाथ झा द्वारा किया गया। श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के वाचस्पतिसभागार में यह कार्यक्रम किया गया।

इन्द्रविजय — २८ सितम्बर २०१७

प्रो. कपिल कपूर

पण्डित ऋषि कुमार मिश्र द्वारा अपने जीवन काल में पण्डित मधुसूदन ओझा प्रणीत इन्द्रविजय ग्रन्थ के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य प्राच्यविद्या के प्रतिष्ठित विद्वान् प्रो. कपिल कपूर जी को सौंपा गया था। वर्षों परिश्रम के बाद यह ग्रन्थ 'भारतवर्ष द इण्डिया नैरेटिव' के नाम से सुसज्जित होकर इस वर्ष के स्मारक व्याख्यान में लोकार्पित हुआ।

ग्रन्थ का लोकार्पण करती हुई प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डॉ. कपिला वात्स्यायन ने कहा कि आज समाज को ओझाजी जैसे विद्वानों की जरूरत है क्योंकि आधुनिक वैदिक विद्वान् अपने मन के अनुसार वेद के स्वरूप को व्याख्यायित करते हैं जो सर्वथा भ्रामक है।

प्रो. कपूर ने कहा कि किस प्रकार ओझा जी ने भारतवर्ष के सीमाविस्तार को, तत्कालीन संस्कृति को, भाषा और लिपि को भारतीय विद्वानों के समक्ष इस ग्रन्थ के माध्यम से प्रस्तुत किया है। ओझाजी ने इन विषयों के लिए वेदों एवं पुराणों को प्रमाण के रूप में रखा है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि कालिदास ने लिखा है कि उज्जयिनी के बाजार में हीरे, मोती आदि ढेर लगे होते थे। ओझाजी का भारतवर्ष का वर्णन कोई अतिशयोक्ति नहीं है अपितु प्रमाण पर आधारित तथ्यात्मक है।

स्वागतवक्तव्य देते हुए डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल ने कहा कि इस ग्रन्थ में भारतवर्ष का विस्तार चीन सागर से पश्चिम लालसमुद्र तक फैला हुआ था। अनेक प्रकार की विद्याओं, शस्त्रों और स्थानों के नाम से भारतवर्ष का ऐतिहासिक महत्त्व परिलक्षित होता है। यह कार्यक्रम इण्डिया इन्टर नेशनल सेंटर में समायोजित किया गया।

ब्रह्मविज्ञान : कार्यशाला एवं संगोष्ठी

ब्रह्मविज्ञान में दो शब्द हैं- ब्रह्म और विज्ञान। ब्रह्म मूल तत्त्व को कहते हैं तथा उससे होने वाली सृष्टि को ही हम विज्ञान कहते हैं। इस प्रकार ब्रह्मविज्ञान का अर्थ सृष्टिविद्या है। इस ब्रह्मविज्ञान को समझाने वाले अनेक ग्रन्थों का लेखन ओझाजी ने किया है। जिसमें ब्रह्मसिद्धान्त, ब्रह्मसमन्वय, ब्रह्मविनय, ब्रह्मचतुष्पदी, महर्षिकुलवैभवम्, शारीरकविज्ञानभाष्य तथा संशयतदुच्छेदवाद आदि प्रमुख हैं।

ब्रह्मविज्ञान पर आयोजित कार्यक्रम

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री शंकर शिक्षायतन द्वारा ब्रह्मविज्ञान के क्षेत्र में अनेक सम्मेलन, संगोष्ठी तथा कार्यशाला आदि का सफलता पूर्वक समायोजन किया गया है जिसका विवरण अधोलिखित है-

शारीरकविज्ञानभाष्य **१० -१६ दिसम्बर २००९**

ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता और उपनिषद् को प्रस्थानत्रयी कहते हैं। पण्डित मधुसूदन ओझा ने ब्रह्मसूत्र पर शारीरकविज्ञानभाष्य और भगवद्गीता पर विज्ञानभाष्य लिखा है। उपनिषद् पर उनके शिष्य पण्डित मोतीलाल शास्त्री का हिन्दीविज्ञान भाष्य उपलब्ध होता है। ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय, सोलह पाद, एक सौ एक्यानवे अधिकरण और पाँच सौ पचपन सूत्र हैं। विज्ञानभाष्य लेखन का मुख्य उद्देश्य ब्रह्मविज्ञान का प्रतिपादन है। ओझाजी ने इसमें ब्रह्मसूत्र के अर्थ को स्पष्ट किया है तथा वैदिकविज्ञान के पक्षों को उद्घाटित किया है।

इस कार्यशाला में विचार के प्रमुख बिन्दु थे-जगत् की उत्पत्ति का विचार, जगत् और ब्रह्म का समन्वय, ब्रह्मकारणतावाद, प्रधानकारणतावाद, ख्यातिवाद, अनिर्वचनीयवाद, आचार्य शंकर और ओझाजी।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष प्रो. युगलकिशोर मिश्र, कुलपति, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय ने कहा कि यह हमारे लिए अत्यन्त गौरव का विषय है कि ओझाजी के कर्मक्षेत्र में उनके ब्रह्मसूत्रविज्ञानभाष्य पर सप्तदिवसीय कार्यशाला का शुभारम्भ किया जा रहा है। इस दिशा में निरन्तर कार्य करने की आवश्यकता है। जिससे वैदिकविज्ञान की परम्परा हमेशा चलती रहेगी।

प्रतिदिन इस कार्यशाला के प्रात:सत्र में शारीरकविज्ञानभाष्य पर प्रतिभागी विद्वान् द्वारा शोधपत्र का वाचन किया गया एवं अपराह्ण सत्र में राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य बदरी प्रसाद शर्मा द्वारा भाष्य का पंक्तिश: व्याख्यान किया जाता था। यहाँ चर्चा का विषय इस प्रकार है-

जिस अधिकरण में ब्रह्म की जिज्ञासा होती है, वही जिज्ञासाधिकरण है। जो जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय का कारण स्वरूप वाला ब्रह्म है।

इस कार्यक्रम के समापन समारोह में श्री शंकर शिक्षायतन के अध्यक्ष श्री भरत गोयनका ने कहा कि शिक्षायतन इसी प्रकार से आचार्यों के ग्रन्थों को आधार बना कर कार्यक्रमों का समायोजन करता रहेगा। जिससे आगे की पीढ़ी तैयार की जायेगी। इस कार्यशाला का समायोजन जयपुर के संस्कृत विश्वविद्यालय में किया गया।

शारीरकविज्ञानभाष्य **१६-२२ दिसम्बर २०१०**

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में प्रो. हरीश पाढ़, कुलपति, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आनन्द गुजरात ने कहा कि हमरा विश्वविद्यालय संस्कृत विद्या के उत्थान के लिए कृतसंकल्पित है। मुझे व्यक्तिगतरूप से संस्कृत से अत्यधिक लगाव है। इस उद्घाटन सत्र में मञ्च पर प्रो. लक्ष्मेश वी. जोशी मुख्यवक्ता के रूप में, प्रो. नरेन्द्र पाण्डेय मुख्य अतिथि के रूप में, प्रो. डी एस. मिश्रा विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा सारस्वत अतिथि के रूप में सन्त श्री साधु रसिकविहारीजी थे।

इस कार्यशाला के प्रमुख बिन्दु थे-ब्रह्म के पर्याय रूप आकाश का स्वरूप, पुरुष का संसारी और परमेश्वर का स्वरूप, आनन्दमय द्वारा ब्रह्मस्वरूप का निर्धारण, देवतास्वरूप विचार, मोक्ष का स्वरूप, अक्षर का स्वरूप, कर्तृत्व विमर्श, वैश्वानर शब्द का अर्थनिर्धारण आदि।

इस कार्यशाला के प्रात:सत्र में शारीरकविज्ञानभाष्य पर प्रतिभागी विद्वान् द्वारा शोधपत्र का वाचन किया गया एवं अपराह्ण सत्र में काशी के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य नरेन्द्र नाथ पाण्डेय द्वारा ग्रन्थ के निर्धारित अंश का प्रतिपद (एक-एक शब्द का) व्याख्या की गयी। यहाँ विद्वानों के द्वारा किये गये विमर्श के प्रमुख बिन्दु थे -ब्रह्म इस जगत् का कारण है। हम शब्द प्रमाण पर चलने वाले हैं। शब्द हमें जो कुछ कहता है हम उसे ही सन्देह रहित होकर स्वीकार करते हैं या प्रमाण मानते हैं। शब्द का अर्थ शास्त्र अथवा वेद है। वेद में किसी अचेतन को जगत् का कर्ता नहीं माना गया है। चेतन ब्रह्म ही जगत् का कर्ता हो सकता है। सरदार पटेल विश्वविद्यालय, गुजरात में यह कार्यशाला की गयी।

शारीरकविज्ञानभाष्य २०-२४ दिसम्बर २०११

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में प्रो. शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी, प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी, प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र आदि विद्वानों ने वैदिकविज्ञान के महत्त्व का प्रतिपादन किया।

कार्यशाला के प्रमुख बिन्दु थे-अव्यय का स्वरूप, निर्विशेष का स्वरूप, प्रजापति का स्वरूप, अग्नि और सोम का स्वरूप, परात्पर का स्वरूप, जीव का स्वरूप, ईश्वर का स्वरूप, उपादान और निमित्तकारण के रूप में ब्रह्म, पञ्चजन शब्द का दार्शनिक विवेचन आदि।

इस कार्यशाला में प्रतिभागी विद्वानों द्वारा अनेक विषयो पर शोधपत्र का वाचन किया गया। विविध विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोधपत्रों के माध्यम से इस ग्रन्थ को सरलतापूर्वक समझने का प्रयास किया गया। यहाँ मुख्यरूप से सभी विद्वानों ने परस्पर चर्चा के माध्यम से विषय को स्पष्ट करने में अपना महत्त्वपूर्ण बौद्धिक योगदान दिया । विचार-विमर्श में चर्चा के केन्द्र में यह विषय रहा कि 'ब्रह्म ही इस जगत् का निमित्त कारण है एवं वही जगत् का उपादान कारण है।' काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में यह कार्यशाला समायोजित हुई।

संशयतदुच्छेदवाद ०१- ०३ दिसम्बर २०१२

संशयतदुच्छेदवाद तीन काण्डों में विभक्त है। प्रथम काण्ड का नाम विज्ञानोपक्रमाधिकार है। इसमें छह विषयों को समाहित किया गया है। संपूर्ण ग्रन्थ पद्यों में निबद्ध है। पद्यों की संख्या लगभग ५०० हैं। इस ग्रन्थ पर पण्डित मोतीलाल शास्त्री का हिन्दी विज्ञान भाष्य है।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. बिन्दा प्रसाद मिश्र, कुलपति, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पण्डित ओझाजी ने वैदिकविज्ञान के माध्यम से वेदार्थ का प्रतिपादन किया है। उनका वेदार्थ चिन्तन आध्यात्मिक स्तर पर, आधिभौतिक स्तर पर तथा आधिदैविक स्तर पर है। आज के सन्दर्भ में यदि वेद को समझना है तो ओझाजी की समग्र रचना को समझना आवश्यक है। इस सत्र में प्रो. वसिष्ठ त्रिपाठी, प्रो. जयप्रकाश नारायण त्रिपाठी, प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी, जंगमबाड़ी मठ के पीठाधीश जगद्गुरु श्री चन्द्रशेखर शिवाचार्य जी आदि विद्वानों ने वैदिकविज्ञान एवं संशयतदुच्छेदवाद पर अपना विचार प्रस्तुत किया।

विमर्श के प्रमुखबिन्दु इस प्रकार थे-जगत् के मूल आभु-अभ्व, ईश्वर का जीवस्वरूप, आत्मा का आनन्दस्वरूप, दुखः का स्वरूप आदि । चर्चा में स्पष्ट हुआ कि ओझाजी आनन्द, चेतना और सत्ता इन तीनों को आभु और नाम, रूप और कर्म इन तीनों को अभ्व मानते हैं। नाम, रूप और कर्मात्मक संसार है और इस से जो परे है वह आनन्द,

चेतना और सत्ता है। वेद में वर्णित आभु और अभ्व को वैदिकविज्ञान में मुख्य पारिभाषिक शब्द के रूप में व्याख्या की गयी है। 'आसमन्तात् भवति' अर्थात् जो सभी जगह व्यापक है वह आभु है और 'अभूत्वा भाति' अर्थात् जिसकी सत्ता नहीं है परन्तु प्रतीति होती है, वही अभ्व है। संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में यह राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई।

संशयतदुच्छेदवाद (प्रथम काण्ड) **१२-१३ अगस्त २०१४**

श्री शंकर शिक्षायतन, नई दिल्ली एवं भारतीय विद्याभवन, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में संशयतदुच्छेदवाद संगोष्ठी का समायोजन किया गया। संगोष्ठी में विमर्श के मुख्य बिन्दु थे-सत्ता, चेतना और आनन्द की एकरूपता, कर्म का सत्ता में अन्तर्भाव, ब्रह्म-कर्म का सम्बन्ध, भय का स्वरूप, भोग के बाद आत्मा में दुखः की उत्पत्ति, माया, महामाया, योगमाया आदि। संगोष्ठी का उद्घाटन श्री अशोक प्रधान, निदेशक, भारतीय विद्याभवन ने किया।

कार्यक्रम में लगभग ३० प्रतिभागी विद्वानों ने संबन्धित विषयों पर अपना-अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। विद्वानों द्वारा चर्चा का मुख्य विषय माया रही।

असीमित को सीमित करने वाली शक्ति माया है। यह माया तीन प्रकार की है- सामान्यमाया, महामाया और योगमाया। योगमाया-परस्पर दो कर्मों के सम्बन्ध को योगमाया कहते हैं। जिस शक्ति से सृष्टि होती है उसे योगमाया कहते हैं। महामाया-आनन्द, विज्ञान, मन, प्राण और वाक् ये पाँच अव्यय हैं। इनको जो सीमा में लाता है या सीमित करता है वह महामाया है। अत एव जिसमें सीमित करने की शक्ति है वह महामाया है। सामान्यमाया-जिसका कार्य-कारण संबन्ध न हो, वह सामान्यमाया है। वेद में भी इसी अर्थ में माया शब्द अनेक जगह आया है।

संशयतदुच्छेदवाद (द्वितीय काण्ड) **१२ सितम्बर २०१५**

कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा अध्यक्षता जैन दशन के आचार्य प्रो. वीसागर जैन ने की। संगोष्ठी में विमर्श हेतु इन प्रमुख बिन्दुओं को समाहित किया गया-ईश्वरवादविमर्श, जीव और आत्मप्रामाण्यविमर्श, दीर्घतमा ऋषि, उपास्यदेवता विमर्श, द्रष्टा, दृश्य और दर्शन, अज्ञानश्रेयस्त्वविमर्श, असमाधेयप्रश्नावली की समीक्षा आदि।

इस संगोष्ठी में प्रतिभागी विद्वानों के द्वारा मुख्यरूप से जैनदर्शन का स्यादवाद सिद्धान्त विचार के केन्द्र में रहा। जिस के विषय में विद्वानों का विचार है कि स्याद्वाद, अनेकान्तवाद और सप्तभंगी नय ये तीनों नाम एक ही

सिद्धान्त के हैं। ओझा जी ने संशयतदुच्छेदवाद के द्वितीयकाण्ड में प्रथम विषय के रूप में इसी स्याद्वाद सिद्धान्त को प्रस्तुत किया है। स्यादस्ति (शायद हो), स्यान्नास्ति (शायद न हो), स्यादस्ति नास्ति (शायद सत्-असत् दोनों हैं), स्यादवक्तव्य: (शायद अनिर्वचनीय हो), स्यादस्ति चावक्तव्य: (संभव है यह सब कुछ हो परन्तु है अनिर्वचनीय) स्यान्नास्ति चावक्तव्य: (जो कुछ दिख रहा है-वह संभव है-असत् हो, परन्तु वह असत् भी है-अनिर्वचनीय), स्यादस्ति नास्ति चावक्तव्य: (यह कुछ जो दिख रहा है-संभव है वह सदसत् दोनों हो-परन्तु है दोनों ही अनिर्वचनीय)।

शायद शब्द से परमसत्ता के विषय में संभावना की जा रही है। इन सातों को ओझाजी ने दो भागों में विभक्त किया है प्रथम तीन संभावना अर्थ को बताता है और शेष चार अनिर्वचनीय अर्थ को बताता है। भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में यह संगोष्ठी समायोजित की गयी।

संशयतदुच्छेदवाद (तृतीय काण्ड) ७ नवम्बर २०१५

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता प्रो. पीयूष कान्त दीक्षित, न्याय विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने की। अपनी अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री दीक्षित जी ने कहा की पण्डित ओझा ने संशय के विविध पक्षों की समालोचना की है। जिससे ओझाजी की व्यापक दृष्टि का परिचय मिलता है। न्यायशास्त्र में संशय एक प्रमेय है उसका लक्षण भी वहाँ मिलता है। परन्तु ओझाजी ने संशयों को प्रश्न एवं उत्तर के रूप में समाहित किया है और अनेक दार्शनिक पक्षों को उद्घाटित किया है।

इस कार्यक्रम में विमर्श के प्रमुखबिन्दु थे- जीव, जगत्-आनन्त्य विचार, मृत और नचिकेता का जीवन संवाद, जडजीवेश्वरविमर्श, शरीर नाडी विचार, स्वर्गभेद निरूपण, तत्त्वदर्शन सन्दर्भविचार, योनिपरिवर्तन विचार, उपासनावाद विमर्श, मन:प्रामाण्य विमर्श आदि। विविध विषयों पर चर्चा करते हुए विद्वानों ने वैदिक पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत की जो वेद के अध्ययन के लिए अत्यन्त ही उपयोगी हैं।

स्वर्ग भी एक वैदिक पारिभाषिक शब्द है। ब्रह्मा, विष्णु एवं इन्द्र ये तीन प्रधान देवता हैं। इन तीनों के जो स्थान हैं-वही विष्टप नाम से कहे जाते हैं। ब्रह्मविष्टप, विष्णुविष्टप, इन्द्रविष्टप तीनों स्वर्ग कहलाते हैं। इसकी व्यापक चर्चा ओझा जी ने संशयतदुच्छेदवाद तृतीयकाण्ड में की है। भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में यह संगोष्ठी समायोजित की गयी।

ब्रह्मसिद्धान्त १७ जनवरी २०१५

आचार्य पण्डित ऋषिकुमार मिश्र स्मारक ब्रह्मसिद्धान्त संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रो. शुद्धानन्द पाठक, अध्यक्ष, अद्वैतवेदान्त विभाग, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने कहा कि ब्रह्मसिद्धान्त ग्रन्थ में

ओझाजी ने उसी विषय को लिया है जिस विषय का वर्णन ब्रह्मसूत्र में है। यह ग्रन्थ ब्रह्मसूत्र को समझने में भी अत्यन्त उपयोगी है। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने ग्रन्थ के विषय को स्पष्ट करते हुए बोला कि ब्रह्म स्वरूप सम्बन्धी सभी सिद्धान्तों का विवेचन ब्रह्मसिद्धान्त में है।

संगोष्ठी में विमर्श के प्रमुखबिन्दु इस प्रकार थे- ब्रह्म का स्वरूप, सम्बन्धों का दार्शनिक स्वरूप, माया का स्वरूप, आत्मा का स्वरूप, आनन्दविमर्श, कर्म का स्वरूप, आवरण का स्वरूप, कर्मक्षणिकता का स्वरूप, बल का स्वरूप एवं विधृति का स्वरूप आदि।

इस संगोष्ठी में विद्वानों के द्वारा बताया गया कि ब्रह्म के स्वरूप के सन्दर्भ में ओझाजी के मतों की प्रस्तुति से यह निष्कर्ष निकला कि ब्रह्म के दो रूप निरुक्त और अनिरुक्त हैं। निरुक्त का अर्थ अनेक रूप है जबकि अनिरुक्त का अर्थ एक रूप है। अवयवश: संपूर्ण विभाजन को निरुक्त कहते हैं और जिसमें विभाग का ज्ञान न हो सके वह अनिरुक्त है। जगत् के रूप में वह निरुक्त है और स्वस्वभाव में वह अनिरुक्त है। जगत् रूप निरुक्ति से ही वह निरुक्त बनता है। सृष्टि से पूर्व ब्रह्म अविभक्त निर्विकल्पक रूप में ही रहता है। इस प्रकार ओझा जी ने ब्रह्म के दो रूपों का प्रतिपादन किया है। भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में यह संगोष्ठी समायोजित की गयी।

ऋषितत्त्व **१४ मई २०१६**

उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त आचार्य बलदेव राज शर्मा ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल स्रोत ऋषि हैं। ऋषि ने जिस तत्त्व का जिस रूप में साक्षात्कार किया वैसा ही रूप हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इसीलिए भारतीय जनमानस पर ऋषिऋण है।

ओझा जी प्रणीत 'महर्षिकुलवैभवम्' ग्रन्थ में ऋषि के विविध स्वरूपों का वर्णन है। इसी ग्रन्थ को आधार बनाकर शोधपत्र के लिए विषयों का निर्धारण किया गया। वे विषय इस प्रकार थे-संस्कृत काव्य में ऋषि, पुराणों में ऋषि, निरुक्त में ऋषि, महर्षिकुलवैभवम् में ऋषितत्त्व। आचार्य जवलन्त कुमार शास्त्री ने अपने मुख्यव्याख्यान में ऋषि का स्वरूप उद्घाटित करते हुए कहा कि 'महर्षिकुलवैभवम्' नामक ग्रन्थ में ओझाजी ने ऋषि के चार अर्थों का प्रतिपादन किया है- असद्रूप, रोचनारूप, द्रष्टारूप और वक्तारूप।

संसार में प्राण से युक्त पदार्थ की सत्ता होती है। प्राण में कोई दूसरा प्राण नहीं रह सकता है, इस कारण वह सत् नहीं कहा जाता, सत् न होने से प्राण का नाम 'असत्' है। अत एव प्राण असद्रूप ऋषि है। रोचना का अर्थ चमकना है। आकाशमण्डल में चमकने वाले ऋक्ष, नक्षत्र, तारा आदि में महर्षियों ने ऋषि शब्द से व्यवहार किया है। अत: चमकने वाला तारा भी रोचनारूप ऋषि शब्द का वाचक है। 'ऋषि मन्त्र द्रष्टा होता है। पहले सभी वस्तु

धर्मों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने वाले ऋषि हुए, उन साक्षात् द्रष्टा ऋषियों ने मनुष्यों को उपदेश द्वारा मन्त्र दिया' निरुक्त के इस वाक्य से ऋषि तत्त्व के द्रष्टा हैं और वे तत्त्वज्ञान दूसरों को देते हैं। इसी से द्रष्टारूप ऋषि कहलाता है। निरुक्त, सर्वानुक्रमणी, बृहद्देवता आदि ग्रन्थों में कहा गया है कि जिस वाक्य का जो वक्ता होता है वह उस वाक्य का ऋषि कहलाता है। इस से ऋषि का वक्तारूप सिद्ध होता है। इस प्रकार ऋषि स्वरूप निर्धारण में ओझाजी की अद्भुत दृष्टि थी। भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में यह संगोष्ठी समायोजित की गयी।

यज्ञविज्ञान : संगोष्ठी

यज्ञ शब्द 'यज्' धातु से बना है। यज् धातु के तीन अर्थ हैं– देवपूजा, संगतिकरण तथा दान। देवपूजा से तात्पर्य देवों की पूजा है। संगतिकरण का अर्थ है– एक तत्त्व का दूसरे तत्त्व में समाहित हो जाना। दो पदार्थों को परस्पर मिलाने वाला तत्त्व संगतिकरण रूप यज्ञ है। दान शब्द भी 'दा दाने' और 'दो अवखण्डने' इन दो धातुओं से बना है। इसलिए इसके दो अर्थ हैं। पहला अर्थ है– किसी वस्तु पर अपने अधिकार को छोड़ कर उसे दूसरे को दे देना। दूसरा अर्थ है– टुकड़े करना अर्थात् अपने किसी अंश को अपने से पृथक् करके दूसरे में अर्पित कर देना। यह दोनों अर्थ वाला दान यज्ञ है। ओझाजी संगतिकरण अर्थ को ही केन्द्र में रखकर यज्ञ का स्वरूप निर्धारण करते हैं। ओझाजी का यज्ञ से सम्बन्धित प्रमुख ग्रन्थ यज्ञमधुसूदन, यज्ञसरस्वती, देवतानिवित्, स्मार्तकुण्डसमीक्षाध्याय आदि हैं।

यज्ञविज्ञान पर आयोजित कार्यक्रम

दिल्ली में दो यज्ञविज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्रीय संगोष्ठियों का सफलता पूर्वक समायोजन किया गया जिसका विवरण अधोलिखित है–

दर्शपौर्णमास **१८ अक्टूबर २०१४**

उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष प्रो. लक्ष्मीश्वर झा एवं मुख्य अतिथि प्रो. रवीन्द्रनागर थे। सारस्वत अतिथि के रूप में अपना वक्तव्य देते हुए प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने कहा कि शतपथब्राह्मण में एक सौ अध्याय हैं । इसीलिए इसका नाम शतपथ है। यह यजुर्वेद संहिता का ब्राह्मण है। जिसके शाखा भेद से एक सौ एक विभाग माने गये हैं। इनमें १५ शाखाएँ 'शुक्लयजुर्वेद' नाम से प्रसिद्ध हैं और ८६ शाखाएँ 'कृष्णयजुर्वेद' नाम से प्रसिद्ध हैं। सामान्यतया शुक्लयजुर्वेद की 'माध्यन्दिनशाखा' और काण्वशाखा ही उपलब्ध होती हैं। इन दोनों शाखाओं के ब्राह्मणों का नाम शतपथ है। इन दोनों शाखाओं का नाम वाजसनेयी है। वाजसनेय याज्ञवल्क्य का ही दूसरा नाम है, क्योंकि सम्पूर्ण शुक्लयजुर्वेद के आचार्य याज्ञवल्क्य हैं। इसके १४ काण्डों में १३ काण्ड केवल 'विधि' का विश्लेषण करते हैं। १४ वां काण्ड आरण्यक और उपनिषद् इन दोनों का संग्रह है। पण्डित मोतीलाल शास्त्री ने शतपथब्राह्मण पर हिन्दी विज्ञानभाष्य की रचना की है। इस कार्यक्रम में विमर्श के प्रमुखबिन्दु थे– व्रतोपायनकर्म, अपां प्रणयनकर्म व अपां सादनोपपत्ति, पुरोडाशसंपादन कर्म, मनुष्यदेवतास्वरूपविमर्श, अशनासनमीमांसा, ब्रह्मवरण, अदितिमण्डल, चन्द्रदेवतास्वरूपविमर्श, प्रयाजसंख्याविधान, वेदीकरण एवं वेदी परिग्रह, इडा का गोस्वरूप विमर्श आदि।

इस दर्शपूर्णमास संगोष्ठी में अनेक विद्वानों ने भाग लिया। इस में मुख्यरूप से दर्शपूर्णमास से सम्बन्धित विषय को स्पष्ट करते हुए कहा गया कि दर्श और पूर्णमास इन दोनों में पूर्णमास को पहले किया जाता है। उसके बाद दर्श किया जाता है। यहाँ पूर्णमास से पूर्णिमा तिथि एवं दर्श से आमावास्या तिथि का ग्रहण किया गया है। जो मनुष्य सर्वप्रथम दर्शपूर्णमास यज्ञ करना चाहता है, वह फाल्गुन मास के पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा तिथि को पूर्णमास (पूर्णमासेष्टि) और आमावास्या के बाद प्रतिपदा तिथि को दर्श (दर्शेष्टि) करता है। इसके बाद प्रतिपक्ष के अन्त में विधिपूर्वक दर्शपूर्णमास किया जाता है। यह कर्म आजीवन अथवा तीस वर्ष अथवा एक वर्ष तक निरन्तर करने का विधान है। दर्श और पूर्णमास से पहले पूर्णमासेष्टि होती है। अत एव शतपथ ब्राह्मण में पूर्णमास का प्रतिपादन है। इस दर्शपूर्णमास में 'पुरोडाश' की आहुति दी जाती है। पुरोडाश को हवि कहते हैं। अत एव यह 'हविर्यज्ञ' कहलाता है। इस हविर्यज्ञ में सब से पहले 'व्रतोपायन' कर्म होता है। 'मैं आज से अमुक कर्म में प्रवृत्त होता हूँ। इस कर्म में जो भी नियम हैं, उन सब का मैं मन से, वाणी से और कर्म से पालन करूँगा' इस प्रकार शुरू में आहवनीय अग्नि की साक्षी में जो प्रतिज्ञा की जाती है वह प्रतिज्ञा कर्म ही 'व्रतोपायनकर्म' है। इस प्रकार यज्ञ के प्रायोगिक पक्ष का विस्तृत विश्लेषण इस संगोष्ठी में किया गया। भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में यह संगोष्ठी समायोजित हुई।

वैदिकयज्ञस्वरूपविमर्श **२९ अप्रिल २०१७**

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. शशिप्रभा कुमार, पूर्व कुलपति, साँची विश्वविद्यालय, ने कहा कि पण्डित मधुसूदन ओझा द्वारा लिखित यज्ञसरस्वती नामक ग्रन्थ में यज्ञ के प्रायोगिक विधियों का वर्णन किया गया है। यज्ञसरस्वती का अर्थ है यज्ञ सम्बन्धी ज्ञान। यहाँ सरस्वती का अर्थ ज्ञान है। इसमें श्रौतयागों का प्रतिपादन याज्ञिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से किया गया है। यह एक प्रायोगिक ग्रन्थ है जो दो काण्डों में विभक्त है-सोमकाण्ड तथा अग्निचयनकाण्ड। सोमकाण्ड में तीन मण्डल हैं। प्रथममण्डल में दर्शपौणमास, पिण्डपितृयज्ञ तथा चातुर्मास्य संज्ञक यागों का वर्णन किया गया है। मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य ज्वलन्त शास्त्री ने यज्ञस्वरूप का विस्तार से परिचय देते हुए कहा कि यज्ञ दो प्रकार के हैं- प्राकृत और द्रव्य । मीमांसकों ने द्रव्ययज्ञ का वर्णन किया है। देवता के उद्देश्य से हवि आदि वस्तु का त्याग ही यज्ञ है। प्रकृति में निरन्तर यज्ञ चलता रहता है उसी के अनुकरण पर द्रव्य यज्ञों का विधान हुआ है।

अध्यक्ष के रूप में प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने कहा कि वैदिकयज्ञ संबन्धी विषयों की प्रस्तुति में कहा गया है कि अग्नि में सोम की आहुति निरन्तर पड़ती है। यह समस्त ब्रह्माण्ड अग्नि में सोम की आहुति पड़ते रहने से स्थित है। इसीलिए उपनिषद् में 'अग्नीषोमात्मकं जगत्'- अर्थात् यह जगत् अग्नि-सोममय है। अग्नि को अन्नाद अर्थात् अन्न को खाने वाला कहते हैं और सोम को अन्न कहते हैं। भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में यह राष्ट्रीय संगोष्ठी समायोजित की गयी। संगोष्ठी में विमर्श के प्रमुखबिन्दु थे- यज्ञ : अवधारणा एवं स्वरूप, यज्ञसंस्था विचार, यज्ञों के प्रकार, प्रकृति यज्ञ का स्वरूप, विकृतियज्ञ का स्वरूप, यज्ञीयपात्रों का स्वरूप, यज्ञीयकुण्ड एवं प्रकार, यज्ञीयसमिधाओं का स्वरूप, हवि: का स्वरूप, यज्ञाग्नियों का स्वरूप, अग्निचयन का स्वरूप।

वेदाङ्गविज्ञान : कार्यशाला एवं संगोष्ठी

व्याकरण, निरुक्त, छन्द, कल्प, शिक्षा और ज्योतिष ये छह वेद के अंग हैं। ये सभी वेदार्थ ज्ञान में सहायक हैं। इस को दृष्टि में रखकर ओझाजी ने व्याकरण से सम्बन्धित व्याकरणविनोद, ज्योतिष से सम्बन्धित कादम्बिनी, छन्द से सम्बन्धित छन्द:समीक्षा और शिक्षा से सम्बन्धित वर्णसमीक्षा और पथ्यास्वस्ति आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

वेदाङ्गविज्ञान पर आयोजित कार्यक्रम

दिल्ली में वेदाङ्गविज्ञान के क्षेत्र में दो संगोष्ठीयों तथा एक कार्यशाला का सफलतापूर्वक समायोजन किया गया। जिसका विवरण अधोलिखित है-

कादम्बिनी **२१-२२ अप्रिल २०१४**

कादम्बिनी का अर्थ मेघमाला है। विविध विद्याओं में वृष्टिविज्ञान भी एक विद्या है। ओझा जी ने इस का संकेत इन्द्रविजय नामक ग्रन्थ में किया है। शास्त्र तीन प्रकार का है- गणित ज्योतिष, फलित ज्योतिष और संहिता शतक। इसी को क्रमश: ताराज्ञान, कुण्डक्षेत्र और वृष्टिविज्ञान के नाम से जानते हैं। इस प्रकार ओझाजी ने आगमविद्या के भेद के रूप में वृष्टिविज्ञान को माना है।

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. आनन्द प्रकाश, संकाय अधिष्ठाता, दिल्ली विश्वविद्यालय ने कहा कि यह ग्रन्थ आधुनिक मौसम विज्ञान वालों के लिए वर्षा के पूर्वानुमान में अत्यधिक उपयोगी है। संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने कहा कि इस ग्रन्थ में वायु के विषय में कहा गया है कि वायु तीन प्रकार के होते हैं- भावक, स्थापक और ज्ञापक। भावक से बादल बनते हैं, स्थापक से आकाश में बादल रहते हैं और भावक से आने वाली वृष्टि का ज्ञान पहले ही हो जाता है। कार्यशाला में विमर्श के प्रमुखबिन्दु थे- मेघ का निर्माण एवं बारिश का समय, वृष्टि का कारण विचार, मेघ की निर्माण प्रक्रिया, बारह माह के आधार पर मेघ का वर्णन, मेघ से संबन्धित वायु आदि ।

इस संगोष्ठी में विद्वानों द्वारा की गयी चर्चा इस प्रकार है- कादम्बिनी ग्रन्थ में निमित्त का उल्लेख किया गया है। ये निमित्त पाँच हैं- ज्योतिष, लोक, आलेख (नक्शा), क्षेत्रमिति और भुवनकोश । इनको जानने वाला ही

निमित्तशास्त्र को अच्छी तरह से जान सकता है। किस प्रकार हवा से बादल का ज्ञान होता है। ओझाजी ने अपने से पूर्ववर्ती अनेक विद्वानों को उद्धृत करते हुए वृष्टिविद्या से संबद्ध अनेक विषयों का संग्रह इस कादम्बिनी नामक ग्रन्थ में किया गया है। संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के सभागार में यह कार्यशाला समायोजित की गयी।

वर्णसमीक्षा **११-१२ दिसम्बर २०१५**

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि वर्णसमीक्षा में ध्वनिविज्ञान एवं वर्ण सम्बन्धी मातृकाओं का विशद वर्णन है। यह ग्रन्थ वैदिक ध्वनि एवं लौकिक ध्वनि को समझाने वाला अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

मुख्य वक्ता प्रो. जयशंकर लाल त्रिपाठी, पूर्व आचार्य, संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने कहा कि पण्डित मधुसूदन ओझा प्रणीत वर्णसमीक्षा ग्रन्थ वर्णमाला विषयक महत्त्वपूर्ण कृति है । इसमें वर्णों का विवेचन आर्यमातृका एवं अनार्यमातृकाओं के रूप में किया गया है । इस संगोष्ठी में विमर्श के प्रमुखबिन्दु थे-मातृका का परिचय, वर्ण विचार की समीक्षा, मातृकाओं का विश्लेषण, वाग्विज्ञान का स्वरूप एवं स्वरसमीक्षा।

शोधपत्र प्रस्तुत करते हुए प्रतिभागी विद्वानों ने मातृका विषय को स्पष्ट करते हुए कहा कि आर्यमातृका चार हैं-ब्रह्ममातृका, अक्षमातृका, सिद्धमातृका एवं भूतमातृका। इससे भिन्न एक अनार्यमातृका भी है। भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में यह राष्ट्रीय संगोष्ठी समायोजित की गयी।

छन्दःसमीक्षा **१९ अगस्त २०१७**

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, पूर्व कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने कहा कि ओझा जी का वैदिक विज्ञान में जो अवदान है वह चिरस्मरणीय है। छन्दःसमीक्षा उनकी एक अद्‌भुत कृति है जिसमें वैदिक एवं लौकिक छन्दों का वर्णन है। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. शारदा शर्मा, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने की। उन्होंने कहा कि इस ग्रन्थ में छन्दःशिक्षा, छन्दोगणित, छन्दोनिरुक्त, छन्दोव्याकरण, छन्दःकल्प इन पाँच विषयों का निरूपण हैं। जिसमें प्रधान रूप से छन्दःपदार्थ को, छन्दों को, छन्दःसम्बन्धी गणित आदि विषयों को पण्डित ओझा जी ने सरलता पूर्वक समझाया है।

इस संगोष्ठी में विमर्श के प्रमुख बिन्दु थे-छन्दः शिक्षा विचार, छन्दोगणित का स्वरूप, संस्कृत छन्दों में मेरु का विश्लेषण, छन्द से संबन्धित मात्राप्रत्य का लक्षण, छन्द में समासवाद का विश्लेषण, छन्दोवाद, छन्दःपदवाद, यतिदोषवाद आदि।

डॉ. मीरा द्विवेदी ने अपना शोधपत्र प्रस्तुत करते हुए कहा कि अवष्टम्भनिरूपण में स्थान-भेद से विराम के अलग-अलग नाम और नियम दिये गये हैं। पद्य में छन्द के कारण किया गया विश्राम, विराम या छेद, छान्दस् अवष्टम्भ कहलाता है। विश्राम की न्यूनता और अधिकता के तारतम्य से इसके पाँच प्रकार हैं। पद के या गण के कारण किया गया विराम अयति, पादमध्य में किया गया विराम यति, पादान्त में किया गया विराम विरति, श्लोकार्ध पर किया गया विराम विच्छेद और श्लोकान्त पर किया गया विश्राम अवसाय कहलाता है। संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के सभागार में इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का समायोजन किया गया।

वैदिक विज्ञान विमर्श **१६-१७ सितम्बर २०१६**

कार्यक्रम में शोधपत्र के लिए निर्धारित विषय थे- पण्डित मधुसूदन ओझा : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व, पण्डित मोतीलाल शास्त्री व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा इन दोनों विद्वानों के ग्रन्थ पर शोधपत्र।

उद्‌घाटनसत्र के अध्यक्ष, प्रो. विनोद शर्मा, कुलपति, जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ने कहा कि पण्डित मोतीलाल शास्त्री जी का एक -एक ग्रन्थ अनमोल है। पण्डित शास्त्री जी ने काल के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि जो तत्त्व भूत भौतिक पदार्थों का संख्यात्मक तथा शब्दात्मक अन्तर करता है, वह काल है। जैसे यह घड़ा है, यह वस्त्र है, यह मनुष्य है।

प्रो. दयानन्द भार्गव, प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान्, जयपुर ने कहा कि ओझा जी ने सृष्टि को बतलाने वाली अनेक विद्याओं का उल्लेख किया है। जिससे प्राचीन भारत की विद्या के स्वरूप का पता चलता है।

संस्कार भारती पी.जी. कालेज के प्राचार्य प्रो. के. एल. शर्मा ने कहा कि ओझाजी और शास्त्री जी पर शोधकार्य इस महाविद्यालय में होना चाहिए। महाविद्यालय एक अलग शोधसंस्थान के रूप में कार्य करना चाहता है।

इस संगोष्ठी में दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, इन्दौर आदि अनेक स्थानों से लगभग १०० विद्वानों ने आकर शोधपत्र का वाचन किया। पी.जी. कॉलेज के सभी छात्रों ने बढ-चढ़ कर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। संस्कार भारती पी.जी. कॉलेज, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन संस्कार भारती कालेज के सभागार में संपन्न हुआ।

पण्डित मधुसूदन ओझा : व्यक्तित्व और कृतित्व **४-५ नवम्बर २०१७**

श्री शंकर शिक्षायतन एवं व्याकरण विभाग, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा के संयुक्त तत्त्वावधान में पण्डित मधुसूदन ओझा के व्यक्तित्व और कृतित्व विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक ४-५ नवम्बर २०१७ को विश्वविद्यालय के दरबार हाल में किया गया।

उद्‌घाटनसत्र के अध्यक्ष प्रो. उपेन्द्र झा, पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय ने कहा कि पण्डित ओझा जी का यज्ञसरस्वती ग्रन्थ यज्ञ के प्रायोगिक पक्ष का विस्तार से वर्णन करता है। इस ग्रन्थ में यज्ञ के क्रम से शुक्लयजुर्वेद की व्याख्या की गयी है।

स्वागतवक्तव्य देते हुए कार्यक्रम के संयोजक प्रो. शशिनाथ झा ने कहा कि मिथिला के महान् विद्वान् पण्डित मधुसूदन ओझा पर उनकी जन्मभूमि में यह पहला कार्यक्रम है। उन्होंने कहा कि पहले आचार्य कक्षा में मिथिलाविभूति नामक किताब में ओझाजी का नाम है। वहीं से मुझे ओझाजी का परिचय है।

मुख्य वक्ता प्रो. सुरेश्वर झा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ओझाजी का आवरणवाद एक सृष्टि के कारण को बतलाने वाला ग्रन्थ है। इसमें वयुन, वय और वयोनाध को मुख्य वैदिक पारिभाषिक शब्द के रूप में वर्णन किया गया है।

वयुन का अर्थ ज्ञान होता है। इसका प्रयोग ऋग्वेद में, निरुक्त में मिलता है। ध्रुव स्तुति के प्रसंग में भागवत में भी प्रयोग मिलता है।

वयका अर्थ धन, अन्न, बाल्यादि अवस्था, वर्ष, जीवन आदि हैं। निघण्टु में इसका उल्लेख हुआ है।

वयोनाध का दूसरा नाम नाध भी है। यजुर्वेद में इसका उल्लेख मिलता है। वय को बाँधने वाला अर्थात् सीमित करने वाला वयोनाध है।

वैदिक परिचर्चा

श्री शंकर शिक्षायतन ने प्रतिमास पण्डित मधुसूदन ओझा एवं पण्डित मोतीलाल शास्त्री जी के ग्रन्थों को आधार बनाकर मासिक संगोष्ठी का समायोजन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के पाँच से सात प्रतिभागी विद्वान् के रूप में भाग ग्रहण करते थे। आगत विद्वानों में एक कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं दूसरे विद्वान् व्याख्यान प्रस्तुत करते थे। सभी उपस्थित विद्वान् ध्यान पूर्वक सुनते एवं अपनी जिज्ञासा भी उपस्थित करते थे।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यह था कि विद्यापीठ के आचार्य पण्डित ओझाजी एवं पण्डित शास्त्री जी की विद्या से परिचित होकर, इनके ग्रन्थों के रहस्य को समझ कर, छात्रों में एवं समाज में वैदिकविज्ञान का प्रचार प्रसार संभव हो सके। वैदिक विज्ञान के हर एक पक्ष पर चर्चा होती रही।

इस कार्यक्रम का शुभारम्भ २८ जनवरी २०११ से २८ मार्च २०१४ तक किया गया तथा इसमें बीस कार्यक्रम समायोजित किये गये। इस में ओझाजी के अनेक ग्रन्थों को लिया गया। जिस में महर्षिकुलवैभवम्, संशयतदुच्छेदवाद, शतपथब्रह्मण विज्ञानभाष्य, शारीरकविज्ञानभाष्य, छन्द:समीक्षा, पितृसमीक्षा आदि ग्रन्थ प्रमुख रहे।

वक्ता विद्वानों में प्रो. पीयूष कान्त दीक्षित, प्रो. शुद्धानन्द पाठक, प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा, आचार्य रमाकान्त शुक्ल आदि प्रमुख विद्वानों का व्याख्यान इस शृंखला में हुआ है।

यज्ञसरस्वती
शारीरकविज्ञानभाष्य **३० मार्च २०१७**

डॉ. रामानुज उपाध्याय, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली ने पं. मधुसूदन ओझा प्रणीत यज्ञसरस्वती ग्रन्थ में वर्णित वैदिक यज्ञ पर प्रकाश डालते हुए वैदिक यज्ञ के स्वरूप एवं उसकी उपादेयता पर विस्तृत विमर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि इस ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में ही यह स्पष्ट कर दिया गया है कि विष्णु एवं हिरण्यगर्भ ही यज्ञ हैं और इन्हीं से समग्र संसार की सृष्टि होती है। वक्ता ने शतपथब्राह्मण के आख्यान में उल्लिखित स्वैदायन ऋषि द्वारा उद्दालक ऋषि के प्रति पूछे गये विविध रोचक प्रश्नों एवं उनके याज्ञिक उत्तरों का विस्तार से प्रतिपादन किया।

द्वितीय वक्ता डॉ. प्रभाकर प्रसाद, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, ने ओझाजी के शारीरकविज्ञानभष्य को आधार बनाकर ब्रह्म, मोक्ष, सृष्टि आदि विषयक उन्हीं के मन्तव्य को स्पष्ट करते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि विज्ञान ही जगत् का मूल है। इस की चर्चा तैत्तिरीयोपनिषद् में भी है। भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में यह कार्यक्रम किया गया।

वेद का स्वरूप विचार **०७ मई २०१८**

परिचर्चा प्रारम्भ करते हुए डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल ने वेद की नित्यता एवं इस के कर्तृत्व पर प्रश्न किया। इस के उत्तर में परिचर्चक ने कहा कि ऋषि के वक्तव्य में उत्तमपुरुष वयं पद का तथा मध्यमपुरुष त्वम् पद का प्रयोग हुआ है। इससे सिद्ध होता है। वेद पुरुष कर्तृक है। 'योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तस्य' परन्तु चर्चा में उपस्थित दूसरे विद्वानों ने कहा कि इस प्रयोग से वेद अनित्य नहीं हो जाता। क्योंकि ऋषि ने अपनी तपस्या के बल से तत्त्व का दर्शन किया तथा उस दर्शन में जो ज्ञात हुआ, उसका उपदेश जनहित के लिए किया। उसने जिस तत्त्व को देखा या उपदेश दिया वह तत्त्व नित्य है। यदि तत्त्वरूप वेद नित्य है तथा उसी से जगत् बना है तो विश्व में प्रयोग होने वाली अन्य भाषा की क्या स्थिति हो सकती है। इसके समाधान में यह पक्ष रखा गया कि वही तत्त्वात्मक वेद अनेक भाषाओं के रूप में अपने आप को प्रकट किया है। जिस प्रकार घट छोटा- बड़ा हो सकता है परन्तु घट रूप में एक है उसी प्रकार भाषिक तत्त्व एक है। व्यवहार में प्रयोग होने वाली भाषा अनेक हैं। भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में यह कार्यक्रम किया गया।

व्याख्यानमाला

पण्डित मोतीलाल शास्त्री की वेदव्याख्या पद्धति **जोधपुर, १० मार्च २०१०**

प्रो. दयानन्द भार्गव ने अपने वक्तव्य में कहा कि मोतीलाल शास्त्री जी का व्यक्तित्व अद्‌भुत था। मैं उन सौभाग्यशालियों में हूँ जो शास्त्री जी का व्याख्यान सामने बैठकर सुना हूँ। उनके व्याख्यान का प्रभाव श्रोता पर तुरन्त हो जाता था। शतपथब्राह्मण के एक उदाहरण को आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ–यह जगत् अग्नीषोमात्मक है। जीव में रहने वाला अग्नि आहुति को ग्रहण करता है, इस स्थिति में जीव अन्न को ग्रहण करता है, अत एव वह अन्नाद कहलाता है। अन्नाद का अर्थ है अन्न को खाने वाला। अन्नाद में डालने वाली आहुति अन्न कहलाता है। अन्न और अन्नाद का परस्पर मिलना ही यज्ञ है। अन्नाद की स्थिति में वह अग्नि और अन्न की स्थिति में वह सोम है। अत: 'अग्नीषोमात्मकं जगत्' यह सिद्ध होता है।

व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए पण्डित अनन्त शर्मा ने कहा कि शास्त्रीजी का शतपथब्राह्मण विज्ञानभाष्य वैदिकविज्ञान के लिए अनुपम निधि है। इस में अलग से शास्त्री जी ने पारिभाषिक शब्दों का परिचय प्रस्तुत किया है। वैदिक पारिभाषिक शब्द का अर्थ जब तक ज्ञात न हो जाय तब तक शास्त्र के रहस्य को नहीं जाना जा सकता।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. नवीन माथुर, कुलपति, जोधपुर विश्वविद्यालय ने कहा कि आज मुझे संस्कृत विद्या को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरी इच्छा है कि पण्डित मधुसूदन ओझा शोधप्रकोष्ठ का विस्तार होना चाहिये। जिससे उस विद्या पर और अधिक कार्य संभव हो सके।

पण्डित मोतीलाल शास्त्री की वेदव्याख्या पद्धति **जोधपुर, २६ नवम्बर २०११**

प्रो. दयानन्द भार्गव ने अक्षर और क्षर पर आधारित व्याख्या पद्धति को स्पष्ट किया । उन्होंने कहा कि ओझाजी और शास्त्री जी दो युग्म शब्दों को आधार बना कर वैदिकविज्ञान को परिभाषित किया है। जैसे- अमृत-मृत्यु, सत्-असत्, अभ्व-आभु, ऋत-सत्य, क्षर-अक्षर, रस-बल, ज्ञान-विज्ञान, अग्नि-सोम, नाभि(केन्द्र)-प्रधि (परिधि), भृगु-अंगिरा, ब्रह्म-कर्म आदि । ऐसा नहीं कि युग्म तत्त्व को ही केवल माना स्वतन्त्र तत्त्व को भी माना है। जैसे प्रजापति, आत्मा, अव्यय, मन, प्राण, वाक् आदि। भाव यह है कि उन्होंने अनेक शैली का आश्रय लिया

है। उनकी बुद्धि में सम्पूर्ण शास्त्र है। जिसमें मुख्यरूप से ब्राह्मणग्रन्थ और पुराण है। पण्डित मोतीलाल शास्त्री ने अपने हिन्दी विज्ञान भाष्य में इन विषयों को और अधिक स्पष्टता से समझाया है।

पण्डित अनन्त शर्मा ने अपने व्याख्यान में कहा कि शास्त्री जी ने शतपथब्राह्मण हिन्दी विज्ञानभाष्य में आत्मविज्ञान, ब्रह्मविज्ञान और यज्ञविज्ञान इन तीन पारिभाषिक पदों को स्पष्ट किया है। आत्मविज्ञान- सभी का आधार है, विश्व से परे है, शुद्ध तत्त्व ही आत्मा है। इसी आत्मतत्त्व के आधार पर 'ब्रह्म' और 'यज्ञ' दोनों आश्रित हैं। मौलिक तत्त्व का नाम ही ब्रह्म है । यही उस आत्मा का प्रथम तथा मुख्य विवर्त है। यौगिकतत्त्व का नाम यज्ञ है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. नवीन माथुर ने कहा कि मञ्च पर उपस्थित विद्वानों को सुनने का मुझे सौभाग्य मिला तथा शास्त्री जी ने जो मौलिक और यौगिक शब्द की चर्चा की है उसका आधुनिक विज्ञान में भी महत्त्व है। दो रसायनिक पदार्थ मिश्रण से पूर्व मौलिक तत्त्व के रूप में रहता है एवं मिश्रण होने पर वह यौगिक हो जाता है यही वर्तमान वैज्ञानिक का भी मत है।

वेदों में नाभिकीय ऊर्जा **जोधपुर, १५ सितम्बर २०१२**

डॉ. गुलाब कोठारी ने वेद में वर्णित नाभिकीय ऊर्जा विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि ओझा जी ने नभ्य प्रजापति का उल्लेख अपने ग्रन्थों में किया है। नभ्य प्रजापति को समझने के लिए साईकिल को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है। जिस प्रकार साईकिल के पहिये में स्पोक लगा रहता है। वह स्पोक नीचे की तरफ चारों ओर रहता है तथा धुरी पर (केन्द्र पर) एक जगह एकत्रित रहता है। जो एक जगह रहता है वही नभ्य शब्द से जाना जाता है। वैदिकविज्ञान में 'केन्द्र में जो इन्द्रप्राण रहता है। उसे नभ्य शब्द कहा गया है।' नाभिकीय ऊर्जा के प्रसंग में भी यही बात है कि केन्द्र में स्थित परमाणु अपनी शक्ति को बाहर करता है। वैदिक विज्ञान में भी यही मिलता जुलता अर्थ है।

श्रीरामभरोसे लाल गुप्ता जो स्थानीय वैज्ञानिक हैं उन्होंने कोठारी जी के बात को स्पष्ट करते हुए कहा कि बिजली के क्षेत्र में इसका अधिक उपयोग हो रहा है। आधुनिक विज्ञान भी केन्द्र को स्वीकार करता है। ओझा जी और शास्त्री जी का वैज्ञानिक सिद्धान्त आधुनिक विज्ञान के लिए बहुत उपयोगी है।

अध्यक्ष अश्विनीकुमार मलिक ने कहा कि कोठारी साहब ने जो बात कही वह आज के समय में भी प्रासंगिक है। मैं शास्त्रीजी के कुछ ग्रन्थों को पढ़ा हूँ और उसको समझने का प्रयास कर रहा हूँ। मुझे आशा है कि आने वाली पीढ़ी इनके ज्ञान से और अधिक लाभान्वित हो इसके लिए एक छोटी सी पुस्तिका होनी चाहिए। जिसमें सामान्य जन को समझने में सहूलियत हो।

वैदिक वाङ्मय में मनोविज्ञान
छन्दःसमीक्षा : एक विश्लेषण **जोधपुर, २५ सितम्बर २०१३**

प्रो. रामानुज देवनाथन् ने वैदिक वाङ्मय में मनोविज्ञान विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मन एक ऐसा तत्त्व है जिसको सभी दार्शनिकों ने स्वीकार किया है। पण्डित मधुसूदन ओझा जी ने अपने ग्रन्थों में मन के अनेक आयामों को प्रस्तुत किया है वह सभी के लिए स्वीकार्य है। यहाँ विशेष ध्यातव्य है कि ओझाजी और शास्त्रीजी ने मन को श्वोवसीयस् नाम से उल्लेख किया है। इस का निर्वचन है 'श्वः श्वः वसीयस्'। इस निर्वचन से श्वोवसीयस् का अर्थ है प्रतिक्षण बदलने वाला मन। इसी वैदिक शब्द के आधार पर लोक में भी मन के विषय में कहा जाता है कि मन हर क्षण बदलता रहता है।

डॉ. रमाकान्त शुक्ल ने छन्दःसमीक्षा ग्रन्थ का विश्लेषण विषय पर बोलते हुए कहा कि छन्दःसमीक्षा एक अद्भुत ग्रन्थ है। जिसमें अनेक प्रकार के वैदिकछन्दों एवं लौकिक छन्दों का वर्णन किया गया है। छन्द आर्थिक और वाचिक भेद से दो प्रकार का है। वाचिक छन्दों में अनेक वर्णों से निष्पन्न शरीर वाली वाणी का अभिनय होने पर किसी न किसी प्रकार की मर्यादा से बद्ध छन्दों की आधारभूत भूमिका का अनुभव होता है, जिस भूमिका का स्वरूप वर्णों के परिवर्तन हो जाने पर भी नष्ट नहीं होता तथा उस मर्यादा का नाश होने पर उस भूमिका का नाश हो जाता है, वह अनिर्वचनीय वर्णभूमिका या मर्यादा छन्द कहलाती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. नरेन्द्र अवस्थी ने कहा कि शास्त्री जी की व्याख्याशैली वर्तमान समय में अधिक प्रभावशाली है क्योंकि पूरा विश्व विज्ञान की ओर आकर्षित हो रहा है तथा सृष्टि का मूल कारण क्या है, इसके अन्वेषण में सभी विदेशी विद्वान् लगे हैं। शास्त्री जी का एक संशयतदुच्छेदविज्ञानभाष्य से ही सृष्टि विषयक सभी प्रश्नों का समाधान हो सकता है। आवश्यकता है कि वहाँ तक यह ग्रन्थ पहुँचे।

शारीरकविमर्श का वैशिष्ट्य
वेद धर्म की तात्त्विक दृष्टि **जोधपुर, २१ सितम्बर २०१७**

प्रो. गणेशीलाल सुथार ने शारीरकविमर्श का वैशिष्ट्य विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस में सोलह प्रकरण हैं। ये सभी प्रकरण शारीरकविज्ञान भाष्य के ही विषयों को प्रदिपादित करता है। ओझा जी के अनुसार वाक् दो प्रकार के हैं- शब्दब्रह्मरूप और अर्थब्रह्मरूप। अर्थब्रह्म का तात्पर्य अग्नि से है। शाब्दिकवाग्विवर्त शब्दमय है, आग्नेयवाग्विवर्त विज्ञानमय है। शाब्दिकवेद शास्त्र है जबकि आग्नेयवेद विज्ञान है। इस प्रसंग में ओझाजी को इतना कहना अभीष्ट है कि जो कारणस्वरूप है वह विज्ञान और जो कार्यस्वरूप है वह शास्त्र है।

द्वितीय वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. सत्यप्रकाश दुबे ने कहा की पण्डित मधुसूदन ओझा का वेदधर्मव्याख्यान ग्रन्थ अद्भुत है । इसमें वेद से सम्बन्धित अनेक विषयों को समाहित किया। ओझा जी ने इस ग्रन्थ में मिथ्या शब्द

को स्पष्ट किया है। आजकल मिथ्या को झूठ इस अर्थ में ग्रहण करते हैं। 'मिथ' धातु सङ्गमन (अर्थात् साथ-साथ रहना) अर्थ का वाचक है। सङ्गमन अर्थात् दूसरे प्राण में अपने प्राण को संयुक्त करके ऐक्यभाव से युक्त हो जाना है। इसी अर्थ में 'मिथो, मिथु, मिथुन' आदि शब्दों में भी यही अर्थ समझना चाहिये। 'मिथ्या' शब्द को सुन कर 'इसकी सत्ता नहीं है' यह अर्थ नहीं समझना चाहिए किन्तु 'दूसरे की सत्ता से सत्तावान् पदार्थ' यह अर्थ ग्रहण करना चाहिए।

आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि शास्त्री जी के हिन्दी भाष्यों का जितना प्रचार होना चाहिए उतना नहीं हो पाया है। हम सब को मिलकर इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है। शतपथब्राह्मण विज्ञानभाष्य का पुन: प्रकाशन आवश्यक है।

वैदिक संस्कृति का वैज्ञानिक आधार : विज्ञानभाष्य **२७ नवम्बर २०१३**

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. हरेराम त्रिपाठी, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने की। वक्ता डॉ. धनञ्जय कुमार पाण्डेय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने शारीरकविज्ञानभाष्य विषय पर बोलते हुए कहा कि ब्रह्मसूत्र का ही दूसरा नाम शारीरकसूत्र है। ओझा जी ने ब्रह्मसूत्र में ब्रह्म को चतुष्पाद् माना है। ब्रह्म का चतुष्पाद् के रूप में वर्णन माण्डूक्योपनिषद् में (सोऽयमात्मा चतुष्पाद्)मिलता है । ओझा जी ने इसी वाक्य को आधार मान कर ब्रह्मचतुष्पदी नामक ग्रन्थ लिखा है एवं अपने ब्रह्मविज्ञान के ग्रन्थों में चतुष्पाद्ब्रह्म का वर्णन विस्तार से किया है। शारीरकविज्ञान भाष्य में भी ब्रह्म के इसी चतुष्पाद् को सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया गया है। निर्विशेष, परात्पर, प्रजापति एवं विग्रह (शरीर) ये चार चतुष्पाद् हैं।

विद्याश्री न्यास, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के सभागार में सामायोजित इस कार्यक्रम में संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के विद्वानों एवं शोधच्छात्रों ने सहभागिता की ।

संस्कृत भाषा एवं संस्कृति : सन्दर्भ : मधुसूदन ओझा का रचनाकर्म **२२ दिसम्बर २०१४**

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सत्यदेव मिश्र ने की तथा मुख्य वक्ता प्रो. युगल किशोर मिश्र ने ओझाजी के रचनाकर्म पर बोलते हुए कहा कि पण्डित मधुसूदन ओझा अपने गुरु महामहोपाध्याय शिवकुमार मिश्र के आदेशानुसार आजीवन वेदविद्या के अध्ययन में लगे रहे। वेदविद्या के रहस्य को समझकर वैदिकविज्ञान के प्रचार के लिए २८८ ग्रन्थों का प्रणयन किया। जिसमें से लगभग ८० ग्रन्थ आज भारतीय पाठक को मिल रहे हैं। इन्होंने वेद में चार तत्त्वों को देखा जिसमें यज्ञ, विज्ञान, स्तोत्र एवं इतिहास प्रमुख है। यज्ञ के लिए यज्ञमधुसूदन नामक ग्रन्थ विभाग है, विज्ञान के लिए ब्रह्मविज्ञान नामक ग्रन्थ विभाग है, इतिहास वर्णन के लिए ख्याति ग्रन्थों को बनाया और चौथा स्तोत्र एवं आगम।

द्वितीय वक्ता श्री मुरली मनोहर पाठक ने कहा कि पण्डित ओझाजी अनेक विद्याओं के मर्मज्ञ हैं। जिन्होंने ज्योतिष शास्त्र में कादम्बिनी ग्रन्थ लिखा है, व्याकरण शास्त्र में व्याकरणविनोद आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया है, दर्शन के क्षेत्र में शारीरकविज्ञानभाष्य, ब्रह्मविनय, ब्रह्मसमन्वय आदि ग्रन्थ हैं, वेद के क्षेत्र में यज्ञसरस्वती ग्रन्थ, धर्मशास्त्र के क्षेत्र में प्रत्यन्तप्रस्थानमीमांसा, आशौचपञ्जिका आदि ग्रन्थ हैं। इनकी विद्या का चमत्कार इस तथ्य से है कि इन्होंने भाषावैज्ञानिक वर्णसमीक्षा एवं पथ्यास्वस्ति नामक ग्रन्थों का प्रणयन किया है। पुराण के क्षेत्र में पुराणमीमांसा ग्रन्थ प्रमुख हैं। कोश के क्षेत्र में वैदिककोश विख्यात है।

इस प्रकार ओझा जी का वाङ्मय अनेकविद्याओं का संग्रह है। आज संस्कृत जगत् को इस विद्या को समझने एवं परखने की जरूरत है। यह कार्यक्रम महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के सभागार में समायोजित था।

वेद विज्ञानः सन्दर्भः मधुसूदन ओझा का रचनाकर्म **१८ दिसम्बर २०१५**

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. एच. के. महापात्र ने कहा कि पण्डित मधुसूदन ओझा का वैदिकविज्ञान सृष्टि विज्ञान है और इस सृष्टि का मूल यज्ञ है। वक्ता के रूप में पण्डित मधुसूदन ओझा का रचनाकर्म विषय पर बोलते हुए प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने कहा कि यज्ञ परस्पर चलने वाली क्रिया है।

अन्य वक्ताओं में प्रो. श्री किशोर मिश्र, प्रो. कृष्ण कान्त शर्मा, प्रो. हृदय रञ्जन शर्मा एवं जी आञ्जनेय शास्त्री ने वैदिकविज्ञान के विविध विषयों पर अपना विचार प्रस्तुत किया। विद्वानों ने कहा कि पण्डित मधुसूदन ओझा का रचनाकर्म अत्यधिक विशाल है। भारतीय मानस आंशिक रूप से उनकी रचना से परिचित है। आज उनकी रचनाओं से युवा विद्वानों को परिचित होना अवश्यक है। जिससे यह परम्परा आगे बढ़ती रहेगी। यह स्मृति व्याख्यान संस्कृत विद्या धर्मविज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के सभागार में सम्पन्न हुआ।

यज्ञ विज्ञानः सन्दर्भः मधुसूदन ओझा का रचनाकर्म **१७ नवम्बर २०१६**

संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के सभागार में समायोजित इस स्मृति व्याख्यान में स्वागत वक्तव्य डॉ. दयानिधि मिश्र तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. चन्द्रमा पाण्डेय ने की । वक्ता के रूप में डॉ. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी, प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र ने पण्डित मधुसूदन ओझा जी के रचनाकर्म विषय पर अपना विचार प्रस्तुत किया । व्याख्यान में विद्वानों ने कहा कि ओझाजी ने इस विश्व को दो भागों में विभक्त किया है–मौलिक और यौगिक। विश्व के मौलिक तत्त्व का ज्ञान वेदविज्ञान से होता है और यौगिक तत्त्व का ज्ञान यज्ञविज्ञान से । मौलिक ब्रह्म का ज्ञान वेद से और यौगिक ब्रह्म का ज्ञान यज्ञ से होता है।

वेद से ही क्रमपूर्वक विविध नाम वाले देवता सत्ता में आते हैं इनके परस्पर मिलन ही यज्ञ है और यज्ञ से संपूर्ण जगत् बना है।

यज्ञ दो पदार्थों का मिश्रण है। इसीलिए इसको यौगिक कहा। संपूर्ण सृष्टि यज्ञ का ही रूप है। इसीलिए विष्णु को यज्ञ कहा गया है। विष्णु इस संसार के पालन करने वाला देवता हैं। आधुनिक सन्दर्भ में यज्ञ एक कर्मकाण्ड अथवा पूजा पाठ का रूप है। जबकि शास्त्र के अनुसार संपूर्ण ब्रह्माण्ड ही यज्ञ है।

वेदान्त : सन्दर्भ : मधुसूदन ओझा का रचनाकर्म **०७ नवम्बर २०१७**

पण्डित मधुसूदनओझा स्मृति संवाद एवं 'वेदान्त' पर समायोजित इस राष्ट्रीय परिसंवाद में मुख्य अतिथि के रूप में ओझाजी की प्रपौत्री सुश्री पद्मलता ठाकुर ने कहा कि ओझाजी ऐसे प्रतिभा के धनी थे कि उनके सामने राजे-महराजे भी नतमस्तक रहे और उन्होंने अपने स्वाभिमान, तर्कशीलता एवं अध्ययन से पूरी २० वीं शताब्दी में एक अलग पहचान बनायी।

प्रो. नवल किशोर चौधरी ने ओझाजी के कृतित्व की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य श्री ने वैज्ञानिक दृष्टि से वेद के अध्ययन की आधारशीला रखी। वस्तुतः ओझाजी ने ब्राह्मण ग्रन्थ को आधार बनाकर संपूर्ण वेद निधि को सामने रखा। वैदिकविज्ञान की विशेषता का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि द्रष्टा दो प्रकार के होते हैं- लौकिक और ऋषि। जिस विषय को सुनने वाला भी देख सके-ऐसे विषय को देखकर जो उपदेश करता है, वह लौकिक द्रष्टा है।

जो अपने तप के प्रभाव से सर्वसाधारण के जानने के अयोग्य, अतीन्द्रिय, अतीत, अनागत पदार्थों में भी प्रवेश करने की दृष्टि प्राप्त कर लिया हो, वह ऋषि है। यह संवाद संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सभागार में आयोजित था।

ऋषिसम्मान

२००९ :- राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य बदरी प्रसाद शास्त्री का जन्म राजस्थान के झुन्झुनू जिले के पपूरणा गाँव में २४ अप्रिल १९१९ को पण्डित मनसुख दास के पुत्र के रूप में हुआ था। आपका अध्ययन राजस्थान एवं वाराणसी के विद्वानों के समक्ष हुआ। आपने अपने गुरु श्रीकान्त झा से व्याकरण का अध्ययन किया। आपने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय योगदान दिया है। राजस्थान संस्कृत अकादमी ने वर्ष १९९६ में विशिष्ट विद्वत्सम्मान से तथा वर्ष १९९७ में आपके संस्कृत महाकाव्य 'मञ्जुनाथीयकाव्यम्' के लिए माघसम्मान से सम्मानित किया है। वर्ष २००७ में राजस्थान सरकार ने आपको संस्कृत साधना शिखर सम्मान से सम्मानित किया है। वर्ष २००९ में राष्ट्रपति सम्मान से भारत के राष्ट्राध्यक्ष ने सम्मानित किया है।

आचार्य श्री की वैदिक विद्या के प्रति समर्पण एवं संस्कृत सेवा के लिए श्री शंकर शिक्षायतन, ने आपको वर्ष २००९ के ऋषि सम्मान से सम्मानित किया ।

२०१० : - वाराणसी के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य नरेन्द्र नाथ पाण्डेय का जन्म ०२.०१.१९५० को उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद में हुआ है। इनके पिता पण्डित रघुनाथ शर्मा स्वयं सुप्रसिद्ध वैयाकरण थे। आपका अध्ययन अपने पिताश्री के श्रीमुख से तथा वाराणसी के अन्य प्रसिद्ध विद्वानों से हुआ । आप व्याकरण, दर्शन आदि शास्त्रों के प्रसिद्ध विद्वान् हैं। आपका कार्य क्षेत्र संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय है। आपके द्वारा लिखित ग्रन्थों में 'रामानन्दवेदान्तादर्शः' तथा 'वाक्यपदीयपाठभेदनिर्णयः' प्रमुख है। आपके वैदिक विद्या के क्षेत्र में किये गये योगदान एवं संस्कृत सेवा के लिए श्री शंकर शिक्षायतन ने आपको वर्ष २०१० के ऋषि सम्मान से सम्मानित किया ।

२०११ : -आचार्य शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी वैदिकविज्ञान के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। आपने पण्डित मधुसूदन ओझा के शारीरकविज्ञानभाष्य और विज्ञानविद्युत् का हिन्दी अनुवाद किया है। आप के अध्यापन का क्षेत्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय है। आपने संस्कृत में अनेक काव्यों का प्रणयन किया है। आप का जन्म १६.०४.१९३४ को महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी के पुत्ररत्न के रूप में हुआ । आप पण्डित मधुसूदन ओझा और पण्डित मोतीलाल शास्त्री से सुपरिचित हैं। आप अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं। आपकी रचनाओं में गोस्वामी 'तुलसीदासशतकम्', 'सत्यं शिवं सुन्दरं महाकाव्यम्' प्रमुख हैं।

संस्कृत अकादमी जयपुर ने आपको माघपुरस्कार, कालिदासपुरस्कार से सम्मानित किया है। भारत के राष्ट्राध्यक्ष ने राष्ट्रपति सम्मान से आप को सम्मानित किया है। वैदिकविज्ञान के क्षेत्र में आपके योगदान को देखते हुए श्री शंकर शिक्षायतन ने आपको वर्ष २०१० के ऋषि सम्मान से सम्मानित किया ।

२०१२ :- आचार्य रामयत्न शुक्ल का जन्म ०५.०१.१९३२ को वाराणसी में हुआ है। आपके अध्ययन और अध्यापन का क्षेत्र वाराणसी है। आप एक प्रसिद्ध वैयाकरण हैं, आपके द्वारा लिति ग्रन्थों मे 'व्याकरणदर्शने सृष्टिप्रक्रियाविमर्शः' का संस्कृत जगत् में विशेष महत्त्व है। आप करपात्र रत्न एवार्ड, पाणिनि सम्मान, राष्ट्रपति सम्मान आदि से विभूषित हैं।

आपकी वैदिक विद्या के प्रति समर्पण एवं संस्कृत सेवा के लिए श्री शंकर शिक्षायतन ने आपको वर्ष २०१२ के ऋषि सम्मान से सम्मानित किया।

२०१६ : – आचार्य गोविन्द प्रसाद शर्मा का जीवन संस्कृत सेवा के लिए सम्पूर्ण रूप से समर्पित है। आप संस्कृत शास्त्रों के अध्ययन–अध्यापन, ग्रन्थलेखन, संस्कृत पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन, विभिन्न स्थानों पर संस्कृत गुरुकुल एवं निःशुल्क औषधालय तथा गौशालाओं के संचालन के द्वारा संस्कृत एवं समाज की सेवा में महनीय योगदान कर रहे हैं।

आप संस्कृत जगत् में व्याकरण, वेदान्त तथा धर्मशास्त्र के मूर्धन्य संस्कृत विद्वान् हैं। आप लगभग ३६ वर्षों से शास्त्राध्ययन में संलग्न हैं। आप अनेक सम्मानों से सम्मानित हैं जिसमें संस्कृत सेवासम्मान, पाणिनि सम्मान और विद्यासागर सम्मान आदि प्रमुख हैं। आप के द्वारा संचालित संस्कृत गुरुकुल में लगभग ४०० छात्रों को निःशुल्क भोजन, आवास एवं शिक्षण का कार्य हो रहा है। आप निष्कामभाव से संस्कृत की सेवा कर रहे हैं।

श्री शंकर शिक्षायतन ने संस्कृत विद्या के क्षेत्र में किये गये आपके योगदान को देखते हुए वर्ष २०१६ के ऋषि सम्मान से सम्मानित किया।

परियोजना

१. इन्द्रविजय अनुवाद–श्री शंकर शिक्षायतन की स्थापना के प्रारम्भिक काल में श्री ऋषि कुमार मिश्रजी ने संस्कृत के मूर्धन्य विद्वानों को साथ मिलकर अनेक ग्रन्थों को अनुवाद करने का संकल्प लिया । जिसमें छन्द:समीक्षा एवं इन्द्रविजय को हिन्दी एवं अंग्रेजी में अनुवाद करने की योजना बनायी गयी। प्रो. कपिल कपूर, प्रसिद्ध अंग्रेजी एवं प्राच्यविद्या के विद्वान् को इन्द्रविजय के अंग्रेजी अनुवाद का दायित्व प्रदान किया गया। वे सहर्ष इस कार्य को करने में लग गये। वर्षों बाद उनका परिश्रम सफल रहा। इन्द्रविजय का अंग्रेजी अनुवाद 'भारतवर्ष द इण्डियन नौरेटिव' के नाम से रूपा प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित होकर सितम्बर २०१७ को लोकार्पित किया गया।

२. यज्ञसरस्वती (प्रथमभाग):– इस ग्रन्थ का हिन्दी व्याख्या डॉ. रामानुज उपाध्याय, वेदविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली ने तैयार किया है। इस ग्रन्थ में यज्ञ के प्रायोगिक पक्षों का ओझाजी ने वर्णन किया है। दूसरी ओर यह ग्रन्थ शुक्लयजुर्वेद के याज्ञिक पक्षों को उद्घाटित करता है। यह ग्रन्थ शीघ्र ही प्रकाशित किया जायेगा।

३. पण्डित मधुसूदन ओझा प्रणीत जगद्गुरुवैभवम् ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद कार्य चल रहा है। इस वर्ष के अन्त तक यह ग्रन्थ तैयार हो जायेगा।

४. पण्डित मोतीलाल शास्त्री द्वारा १९५६ ई. में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रासाद के समक्ष राष्ट्रपति भवन में पाँच दिनों तक व्याख्यान दिया गया था। उस का अंग्रेजी अनुवाद भी पहले प्रकाशित हुआ था। उसी का संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण तैयार किया जा रहा है।

५. प्रो. रामराज उपाध्याय, आचार्य, पौरोहित्य विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय विद्यापीठ, नई दिल्ली, दिनांक १९/०२/२०१८ से स्मार्तकुण्डसमीक्षा परियोजना पर कार्य कर रहे हैं। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य यह है कि ओझाजी द्वारा स्मार्तकुण्डसमीक्षाध्याय नामक ग्रन्थ में अनेक कुण्डों का परिचय दिया गया है। उन कुण्डों का याज्ञिक स्वरूप क्या है, उन का आधार क्या है? इस दिशा में कार्य करने का संकल्प है।

६. डॉ. प्रभाकर प्रसाद, आचार्य, सर्वदर्शन विभाग श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय विद्यापीठ, नई दिल्ली, दिनांक ०१/०४/२०१६ से शारीरकविज्ञान–भाष्य समीक्षा परियोजना पर कार्य कर रहे हैं। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य ओझाजी तथा आचार्य शंकर के भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। इस कार्य से यह स्पष्ट हो जायेगा कि ओझा जी का क्या विचार है, आचार्य शंकर के किस बिन्दु को ये स्वीकार नहीं करते हैं। इस दिशा में कार्य करने का संकल्प है।

७. डॉ. रामानुज उपाध्याय, आचार्य, वेदविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय विद्यापीठ, नई दिल्ली, को दिनांक २९/०५/२०१३ को यज्ञसस्वती ग्रन्थ की हिन्दी व्याख्या परियोजना दिया गया। आप द्वितीय भाग पर लेखन कर रहे हैं। आपके साथ शिक्षायतन का निरन्तर संबन्ध बना हुआ है। यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है अत एव इस दिशा में कार्य करने का संकल्प है।

छात्रवृत्ति

श्री शंकर शिक्षायतन ने यह निर्णय किया था कि पण्डित मधुसूदन ओझा और पण्डित मोतीलाल शास्त्री के ग्रन्थों को आधार बनाकर यदि किसी विश्वविद्यालय में कोई छात्र शोधकार्य करता है तो इससे नई पीढ़ी तैयार होगी और वही आगे इस दिशा में काम करेगा। इस दृष्टि से इस क्षेत्र में कार्य करने वाले छात्रों को शोधच्छात्रवृत्ति दी गयी।

पुस्तकालय

किसी भी शैक्षिक संस्था के लिए पुस्तक ही सम्पत्ति होती है जो श्री शंकर शिक्षायतन को सहज में प्राप्त है। श्री शंकर शिक्षायतन के संस्थापक आचार्य ऋषि कुमार मिश्र जी का पहचान एक प्रख्यात चिन्तक के रूप में रही है। उन्हीं के द्वारा एकत्रित पुस्तकों की संख्या लगभग दो हजार हैं। जिसमें प्राच्यविद्या के अनेक विधाओं के ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

श्री शंकर शिक्षायतन के पुस्तकालय में पण्डित मधुसूदन ओझाजी, पण्डित मोतीलाल शास्त्री जी, म.म. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी जी और सुरजनदास स्वामी जी के प्रकाशित संपूर्ण ग्रन्थ के साथ ही संस्कृत वाङ्मय के अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हैं।

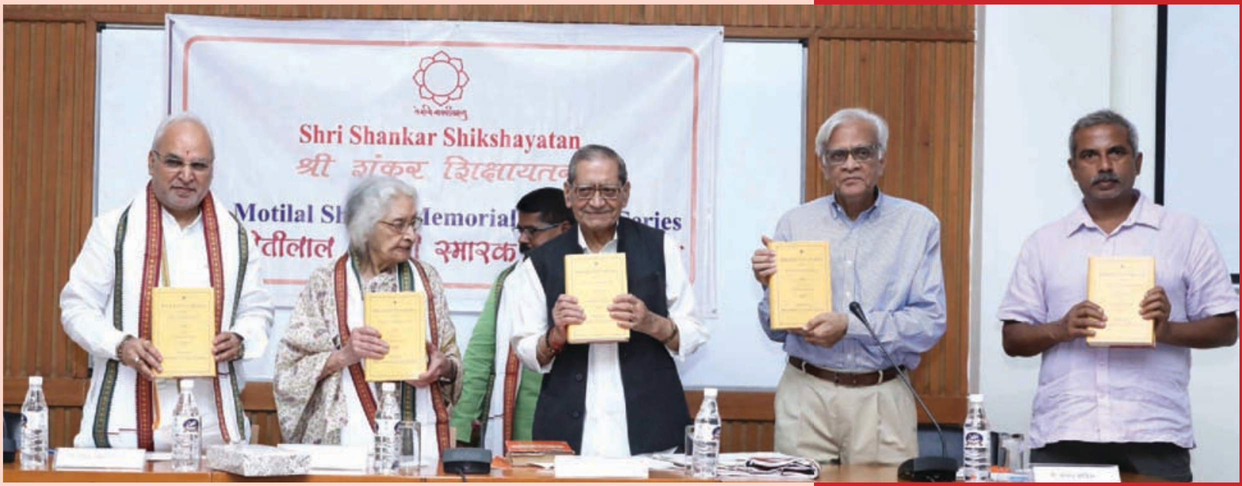
Shri Shankar Shikshayatan

श्रीशंकर शिक्षायतन
पं० मोतीलाल शास्त्री स्मारक व्याख्यानमाला
28 सितम्बर 2015
आयोजन स्थल

ऋग्भ्यो जातां सर्वशो मूर्तिमाहुः
सर्वा गतिर्याजुषी हैव शश्वत्।
सर्वं तेजस्सामरूप्यं ह शश्वत्
सर्वं हेदं ब्रह्मणा हैव सृष्टम्॥

— तैत्तिरीयब्राह्मण ३.१२.९.२

ऋक् से सभी आकार, यजुः से सभी गति और साम से सभी तेज प्रादुर्भुत होते हैं। इनके द्वारा ही इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड की सृष्टि हुई है।

डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल
डॉ. लक्ष्मी कान्त विमल

श्री शंकर शिक्षायतन
डी 6/25, वसंत विहार, नई दिल्ली -110057
Phone: 011-26142604
Email: ssst.2015@gmail.com | www.vediceye.org